



KNOWLEDGE ORGANIZATION: CLASSIFICATION (PRACTICAL)

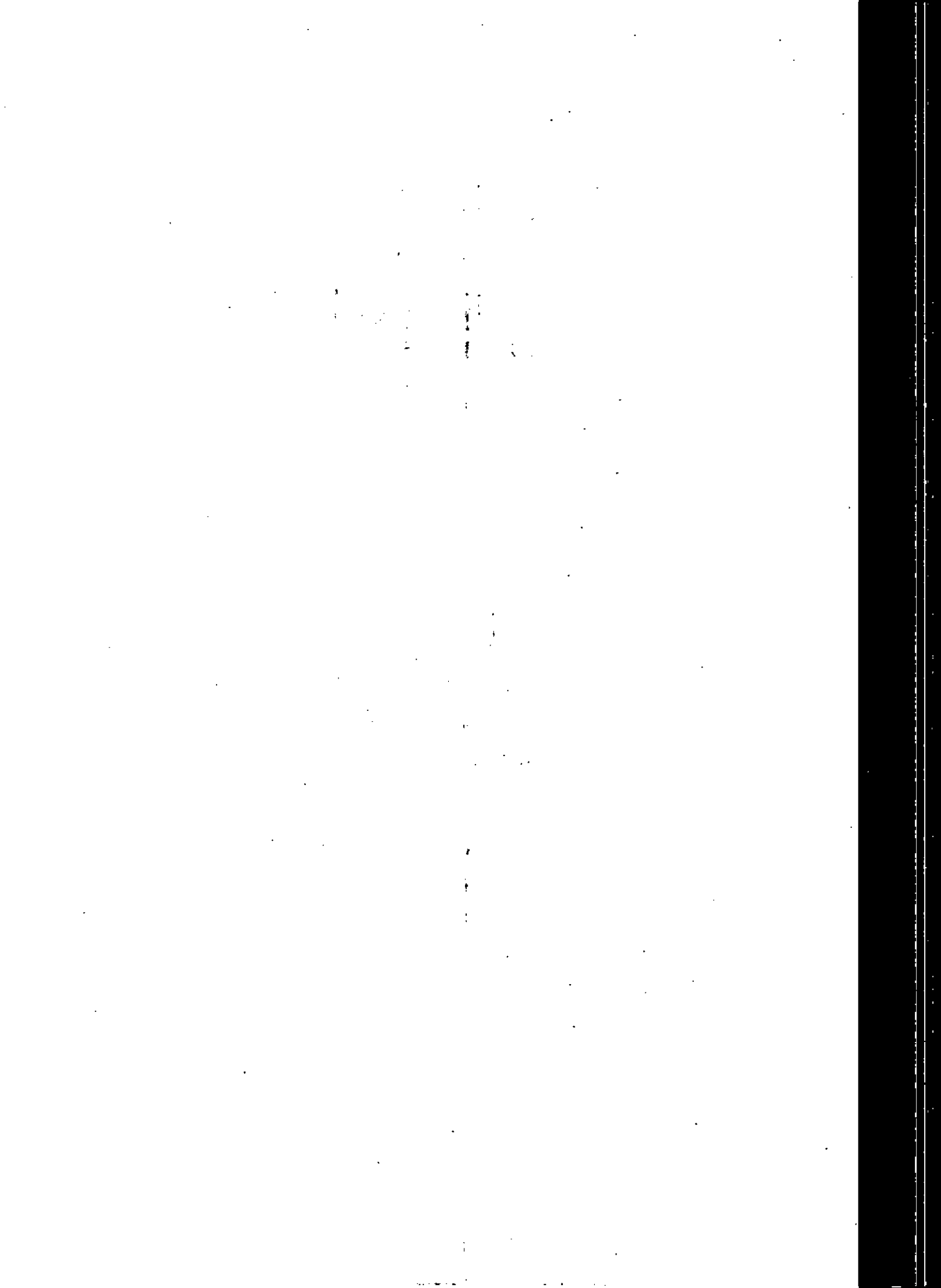
B.LIB.-105



DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION
SWAMI VIVEKANAND
SUBHARTI UNIVERSITY

Meerut (National Capital Region Delhi)







KNOWLEDGE ORGANIZATION : CLASSIFICATION (PRACTICAL)

B.LIB.-105



DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION
SWAMI VIVEKANAND
SUBHARTI UNIVERSITY
Meerut (National Capital Region Delhi)



SLM Module Developed by :
Dr. Ramkumar Pathak
Ph.D. MLIS, PGDLAN

Copyright @ Vidya Prakashan Mandir [P] Ltd.

Reviewed by :

Dr. Alpana

Assessed by :

Study Material Assessment Committee, as per SVSU ordinance No.

No part of this publication which is material protected by this copyright notice may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior permission from the publisher.

Information contained in this book has been published by Vidya Prakashan Mandir [P] Ltd. and has been obtained by its authors from sources believed to be reliable and are correct to the best of their knowledge. However, the publisher and its author shall in no event be liable for any errors, omissions or damages arising out of use of this information and specially disclaim and implied warranties or merchantability or fitness for any particular use.

Published by :



VIDYA[®]

Prakashan Mandir [P] Ltd.

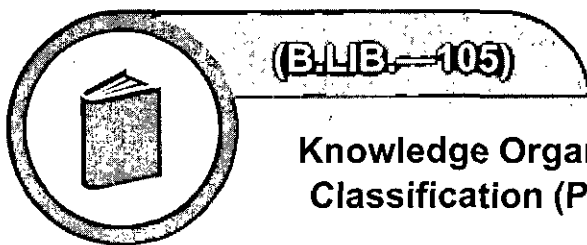
Regd. Office :

G-8, Narain Manzil, 23-Barakhamba Road,
Connaught Place, New Delhi-110 001 (INDIA)
e : info@vidyaprakashan.com; www.vidyaprakashan.com

Head Office :

Vidya Industrial Estate, Baghpat Road,
Meerut-250 002 (Delhi-NCR)
Tel : +91-121-7130642-43; Fax : +91-121-2439233

Typeset & Printed At : VIDYA Prakashan Mandir (P) Ltd.



**Knowledge Organization :
Classification (Practical)**

Syllabus

Unit 1

- ▣ Classification of documents with simple subjects

Unit 2

- ▣ Classification of documents with compound subjects

Unit 3

- ▣ Classification of documents with complex subjects using standard subdivisions / common isolates / special isolates / auxiliary tables / add notes from schedules

Unit 4

- ▣ Assigning Book Numbers

CONTENT



1	साधारण विषयों पर दस्तावेज वर्गीकरण (Classification of Documents with Simple Subjects)	... 1
2	यौगिक विषयों पर दस्तावेज वर्गीकरण (Classification of Documents with Compound Subjects)	... 9
3	मिश्रित विषयों पर दस्तावेज वर्गीकरण (Classification of Documents with Complex Subject)	...19
4	ग्रंथांक पद्धति (Book Assign Number)	...47

UNIT 1

खण्ड-१
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



साधारण विषयों पर दस्तावेज वर्गीकरण

Classification of Documents with Simple Subjects

प्रस्तावना (Introduction)

इस अध्याय में हम दस्तावेज वर्गीकरण का अध्ययन करेंगे। दस्तावेज वर्गीकरण की दो प्रमुख विधियों का भी अध्ययन करेंगे तथा ऐसे विषय का अध्ययन करेंगे जिन पर किसी दूसरे विषय का प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्राथमिक बुनियादी विषय (Basic Simple Subject)

प्राथमिक बुनियादी विषय उन विषयों का वर्गीकरण है जो यूओएस में उल्लिखित कई क्षेत्रों को सम्मिलित करते हैं और साधारणतः बुनियादी विषयों का गठन प्राथमिक सेट और सूची के साथ आरम्भ करना आसान और सहायक होता है। प्राथमिक बुनियादी विषयों को गठन के निम्नलिखित तरीकों से बनाया गया है—

- (1) संलयन आसवन (प्रकार 1 और प्रकार 2)
- (2) फ्यूजन और क्लस्टरिंग

कैनेनिकल प्राइमरी बेसिक विषय

पुस्तकालय वर्गीकरण के लिए एक योग्यता में सम्मिलित प्राथमिक बुनियादी विषयों का प्राथमिक सेट, विषयों में ब्रह्मांड को विखंडन से विभाजित करके बनाया गया है। इन मूल विषयों की वर्गीकरण कर्ता द्वारा अभिधारणा की जाती है। इसलिए परिणामी विभाजनों को पारंपरिक या निहित प्राथमिक बुनियादी विषय कहा गया है।

390	सीत-रिवाज और लोक-संग्रह
370	व्यापार
360	शिक्षा
350	लोक प्रशासन
340	विधि
330	अर्थशास्त्र
320	राजनीति विज्ञान
310	साहित्यकी
300	सामाजिक विज्ञान

(Social Science) को निम्न 9 विभागों में विभक्त किया गया है—

के लिए इसी रूप में आगे भी प्रयुक्त किया गया है। उदाहरण के लिए, 300 सामाजिक विज्ञान किया गया है। प्रत्येक खण्ड को नौ उपखण्डों में विभक्त किया गया है। इस प्रक्रिया को विभाजन वर्ग को नौ विभागों में विभक्त किया गया है और प्रत्येक विभाग को पुनः अन्तर्विभागों में विभक्त किए उपयोग की जाती है। इसी के जिन दस मुख्य वर्गों का वर्णन किया गया है उनमें से प्रत्येक डी दशमलव पगाली में 10 मुख्य विषय श्रेणियों का उपयोग होता है और यह छोटें पुस्तकालयों के

(3) दस्तावेज अधीक्षक

(2) कर्मस पुस्तकालय

(1) डी दशमलव (डीडीसी)

वर्गीकरण प्रणालियाँ उपयोग में लाई जाती हैं—

समान विषयों को एक साथ श्रेणिक पर समूहीकृत किया जाता है। पुस्तकालय की तीन प्रमुख वर्गीकरण प्रणाली पुस्तकालय संग्रह को विषय-संबंधित श्रेणियों में व्यवस्थित करती है इसलिए को समयाचित करता है।

आसवन मोड (प्रकार 1) के मामले में तथा प्राथमिक बुनियादी विषय अनिवार्य रूप से सिद्धान्त

आर्यत प्राथमिक बुनियादी विषय (प्रकार 1)

समझा गया है। यह प्रकार 1 के आसवन द्वारा बनाया गया है।

कर दिया है। परिणामस्वरूप प्रबंधन को प्राथमिक बुनियादी विषय के रूप में समझना सुविधाजनक का एक सिद्धांत तैयार किया गया है और लोगों ने इस क्षेत्र में विशेषज्ञता भी प्राप्त करना आरम्भ प्रबंधन का विचार विभिन्न प्राथमिक विषयों के साथ-साथ विविध विषयों में हो सकता है। प्रबंधन

आर्यत प्राथमिक बुनियादी विषय (प्रकार 1)

एक विज्ञान	सी शैतिकी	एल सैडिसिन	डी इंगिनियरिंग	एक विज्ञान
ई रसायन विज्ञान				बी गणित
				डी इतिहास
				डी कृषि
				डी इतिहास

जानरलिया

की जाती है—

उदाहरण—वृहदान्तर वर्गीकरण (1933) ने प्राथमिक बुनियादी के निम्नलिखित सेट की गणना



नाट-

(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संग्रहण : वर्गीकरण

४०८-४

- 441.3 युद्ध विधि (Law of War)
 441.31 युद्ध व्यवस्था एवं पुरस्का (Belligerency and Belligerent)
 441.32 सेना द्वारा आधिपत्य (Occupation by Military/areas)
 441.35 तटस्थता (Neutrality and Neurate)
 441.36 सामूहिक युद्ध की विधि (Law of Sea warfare)
 441.37 आकार युद्ध विधि
 441.59 व्यक्तिगत अन्तर्राष्ट्रीय विधि

प्रत्येक उप-उपअनुविभागों को पुनः 9 उप-उपअनुविभागों में विभक्त किया गया है—

उप-उपअनुविभाग Sub-Subsection

- 332.9 धाखा, परिवर्तन
 332.8 ब्याज और बट्टा
 332.7 उधार
 332.6 लागत पूंजी का अधशास्त्र
 332.5 विनिमय के अन्य माध्यम
 332.4 मुद्रा
 332.3 ऋण और उधार
 332.2 बचत बैंक और बैंकिंग
 332.1 बैंक और बैंकिंग
 332 विदेशी अधशास्त्र

आवश्यकता अनुसार पुनः किसी वर्ग को 9 उप-अनुविभागों में विभाजित किया जा सकता है—

उप-अनुविभाग Sub-section

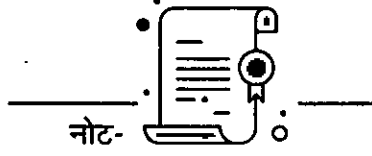
- 329 राजनीतिक पार्टी
 328 विविधकरण
 327 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध
 326 वास्तव
 325 उपनिवास और उपनिवेश
 324 मताधिकार एवं चुनाव
 323 राज्य और उसका व्यक्ति या समूह के सम्बन्ध
 322 राज्य और चर्चा
 321 राज्य का स्वल्प एवं प्रकार
 320 राजनीति विज्ञान

अनुविभाग—प्रत्येक विभाग को पुनः 9 अनुविभागों में विभक्त किया गया है। उदाहरणार्थ—320 राजनीति विज्ञान को 9 उपविभागों तथा अनुविभागों में विभक्त किया गया है जो निम्नलिखित हैं—

उपर्युक्त विभाजन से यह स्पष्ट हो जाता है कि 39 समाज विज्ञान का नया विभाग है।



खण्ड-१
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



मुख्य वर्ग (Main class), विभाग (Division), अनुविभाग (Sub-section) और उप-उपअनुविभाग (Sub-Subsection) को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है—

वर्गांक
(Class Number)

341.35

मुख्य वर्ग (Main Class)	विभाग (Division)	अनुविभाग (Section)	उपविभाग (Sub- Section)	उप-अनुविभाग (Sub- Subsection)
----------------------------	---------------------	-----------------------	------------------------------	-------------------------------------

इस प्रकार विभाग की प्रक्रिया किसी हद तक किसी विषय को अंकित करने में सफल हो सकती है स्पष्ट होता है। डीसी (DC) में सूक्ष्म विभाजन भी किया गया है—

सूक्ष्म उपविभाग

- 617 Surgery
- 617.5 Regional Surgery
- 617.55 Abdominal and Pelvic Cavities
- 617.51 Spleen
- 617.553 Stomach Pylorus
- 617.554 Intestines
- 617.5541 Small Intestines

उपरोक्त उदाहरण से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि वर्गों का सामान्य से अधिकतम सूक्ष्म और विशिष्ट विषय की ओर से क्रमशः विकास होता है।

इसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

- 530 Physics
- 531 Mechanics
- 532 Mechanics of fluids
- 533 Mechanics of gases
- 534 Sound & related vibrations
- 535 Light & parafotic pheromera
- 536 Heat
- 537 Electricity & Electronics
- 538 Magnetism
- 539 Modern Physics
- 540 Chemistry & Allied Sciences
- 541 Physical & theoretical chemistry
- 542 Laboratories, apparatus, equipment
- 543 Analytical Chemistry
- 544 Qualitative Chemistry
- 545 Quantitative Chemistry
- 546 Inorganic Chemistry

एक प्रणाली जिसमें स्पष्ट सैद्धांतिक आधार है, वह है रचनात्मक वर्गीकरण। रचनात्मक 'विषय' की अवधारणा की एक स्पष्ट परिभाषा प्रदान की है—

विषय—इसमें विद्यार्थी का एक संगठित निकष, जिसका विस्तार और इतरादा हितों के क्षेत्र में और आराम से बौद्धिक क्षमता के भीतर और एक सामान्य व्यक्तित्व के अपरिहार्य विशेषता के क्षेत्र में सुसंगत रूप से निरने की सम्भावना है। रचनात्मक ने छात्रों से सम्बन्धित परिभाषा दी है—

'एक विषय विद्यार्थी का एक संगठित और व्यवस्थित शरीर है। इसमें एक विद्यार्थी या कई का स्थापन हो सकता है।' रचनात्मक के विषय की परिभाषा उनमेंको कोलोन वर्गीकरण प्रणाली से काफी प्रभावित है। बहुदलीय प्रणाली पर्याप्त रूप से विषय पदानम तक एकल तत्वों के स्थापन पर आधारित है। यही कारण है, कि विषयों की संयुक्त प्रकृति पर इतनी दृढ़ता से जोर दिया जाता है। यह हालांकि इस तरह के तत्वों के रूप में गौर बराबरी की ओर जाता है कि सीमा एक विषय नहीं हो सकता है, (लेकिन वैकल्पिक रूप से अलग-थलग कहा जाता है) सिद्धान्त के इस पहलू की आलोचना मेटकॉफ द्वारा की गई। रचनात्मक के सिद्धान्त के बारे में मेटकॉफ के संदेह को कठिन राखी में तैयार किया गया है।

यह अस्वीकार्य लगता है कि रचनात्मक इस विषय को एक तरह से परिभाषित करते हैं जो अपने स्वयं के सिद्धम के पक्ष में है। 'विषय' जैसी वैज्ञानिक अवधारणा को जानकारी तक पहुँच स्थापित करने के विभिन्न तरीकों की तुलना करने की सम्भव बनाना चाहिए।

एस. आर. रचनात्मक (1892-1972)

आधिकारण एजेंसियों में विभिन्न प्रकार के विषय पर प्रकाशित होते हैं। पुस्तकालय के संग्रह को विषय के आधार पर अलग-थलग करने में समर्थीकरण नहीं किया जाता है, क्योंकि स्पष्ट एडमिनिस्ट्रेशन से एनएएस के साथ काम करते हैं। इसलिए सरकारी दस्तावेजों में प्रकाशन शुरू होने वाले नम्बर कृत्रिम विभाग से, सी के साथ वाणिज्य विभाग, नेशनल ऐरोनॉटिक्स एण्ड स्पेस एजेंसियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया जाता है जिन्होंने उन्हें बनाया है। इस प्रकार ए से सरकारी प्रकाशनों पर उपयोग किए जाने वाले Sudocs कॉल नम्बरों का निर्माण उन सरकारी

संज्ञात्मक कॉल नम्बर

काम करते हैं, यह जानना आवश्यक है। पुस्तकालयों द्वारा किया जाता है। अलग-थलग पर सामग्री का पता लगाने के लिए कॉल नम्बर कैसे कॉल नम्बर कौनसे वर्गीकरण प्रणाली के पुस्तकालय पर आधारित है जिसका उपयोग एएफएक कोड, वर्गीकरण संख्या कटर संख्या, संस्करण दिनांक, बॉल्युम संख्या और प्रतिलिपि संख्या 1 भाग होते हैं, वर्गीकरण संख्या और कटर संख्या 1 लेकिन इसमें छः भाग हो सकते हैं—स्थान संख्याओं और अक्षरों का समायोजन होता है। प्रत्येक कॉल नम्बर ने लगभग कम से कम दो प्रत्येक पुस्तक को दिया जाता है जो इसे अन्य पुस्तकों से स्पष्ट रूप से पहचानता है। इसमें पुस्तकालय में कॉल नम्बर से पुस्तकें रखी जाती हैं। कॉल नम्बर एक विशिष्ट पहचान कोड जो

लाइब्रेरी ऑफ कौंसिल कॉल नम्बर

- 547 Organic Chemistry
- 548 Crystallography
- 549 Mineralogy



नोट-

(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संग्रहण : वर्गीकरण

पृष्ठ-8



नोट-

“सामग्री उन्मुख” बनाम “अनुरोध उन्मुख” विचार

अनुरोध उन्मुख अनुक्रमण वह अनुक्रमण है जिसमें उपयोगकर्ताओं से प्रत्याशित अनुरोध यह प्रश्न करता है कि दस्तावेजों को कैसे अनुक्रमित किया जा रहा है?

अनुक्रमणिका खुद से पूछती है—“किस विवरण में इस इकाई को ढूँढ़ना चाहिए” और “सभी सम्भावित प्रश्नों के बारे में सोचें एवं यह तय करें कि किसके लिए इकाई प्रासंगिक है”।

अनुरोध उन्मुख अनुक्रमण, सामग्री अनुक्रमण हो सकता है जो किसी विशेष दर्शक या उपयोगकर्ता समूह की ओर लक्षित होता है।

उदाहरणार्थ, एक पुस्तकालय या नारीवादी अध्ययन के लिए एक डेटाबेस एक ऐतिहासिक पुस्तकालय की तुलना में दस्तावेजों को अलग करता है। हालांकि, यह सम्भव है कि नीति आधारित अनुक्रमण के रूप में उन्मुख अनुक्रमण को समझने के लिए अनुक्रमण कुछ आदर्शों के अनुसार किया जाता है और अनुक्रमण करने वाले पुस्तकालय या डेटाबेस के उद्देश्यों को दर्शाता है। इस तरह यह आवश्यक नहीं है कि उपयोगकर्ता अध्ययन के आधार पर एक तरह का अनुक्रमण करता हो केवल अगर उपयोग या उपयोगकर्ता के बारे में अनुभवजन्य डेटा लागू किया जायेगा, तो उन्मुख अनुक्रमण को उपयोगकर्ता-आधारित दृष्टिकोण के रूप में माना जाना चाहिए।

अन्य विचार और परिभाषा

विषय के मानचित्र के लिए आईएसओ (ISO)-मानक में विषय की अवधारणा को इस प्रकार परिभाषित किया गया है—

“चाहे जो भी मौजूद हो या किसी भी अन्य विशिष्ट विशेषताओं की परवाह किए बिना, जिसके बारे में कुछ भी किसी भी तरह से जोर दिया जा सकता है।” आईएसओ 13250-1, यहाँ ड्राफ्ट से उद्धृत किया गया है—

<http://www1.y12.doe.gov/capabilities/sgml/sc34/document/0446.htm#overview>

यह परिभाषा विषय मानचित्र मानक द्वारा प्रदान की गई अवधारणाओं की बन्द प्रणाली के साथ अच्छी तरह से काम कर सकती है। व्यापक सन्दर्भों में, हालांकि, फलदायी नहीं है, क्योंकि इसमें कोई पहचान नहीं होती है कि किसी दस्तावेज या प्रवचन में क्या पहचानना है जब विषय की पहचान की शर्तों या प्रतीकों का वर्णन किया जाए। यदि विषय विश्लेषण के विभिन्न तरीकों से अलग-अलग परिणाम निकलते हैं, तो इन परिणामों में से कौन-सा (सही) विषय को प्रतिबन्धित करता है। विशिष्ट दस्तावेज का विषय क्या है, इसके बारे में अलग-अलग व्यक्तियों की अलग-अलग राय हो सकती है। शब्द “विषय” की एक सैद्धान्तिक समझ विषय विश्लेषण के निर्णायक निर्णय लेने में सहायक कैसे हो सकती है।

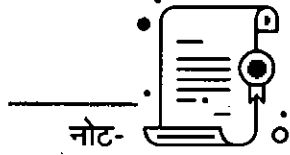
सम्बन्धित अवधारणाएँ

(Basic Ideas)

इंडेक्सिंग वर्ड्स बनाम कॉन्सेप्ट्स बनाम सबजेक्ट्स

बर्नियर (1980) द्वारा अवधारणा अनुक्रमण और विषय अनुक्रमण के बीच अन्तर के लिए एक प्रस्ताव दिया गया था।

खण्ड- १
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



ब्रैडफोर्ड के बिखराव के नियम के सम्बन्ध में Hjørland & Nicolaisen (2005) ने विषय की अवधारणा की जाँच की और तीन प्रकार के प्रकीर्णन के बीच अन्तर किया—

1. विषय बिखरना—किसी दिए गए कार्य या समस्या के लिए उपयोगी वस्तुओं का बिखरना।
2. शब्दार्थ बिखरना—ग्रंथों में और ग्रंथों के संग्रह में अवधारणाओं का बिखरना।
3. शाब्दिक प्रकीर्णन—ग्रंथों में शब्दों का बिखराव और ग्रंथों के संग्रह में।

Isness—"FRSAR वर्किंग ग्रुप इस बात से अवगत है, कि कुछ नियंत्रित शब्दावली विषय (जैसे—फॉर्म, शैली और संसाधनों के दर्शकों को लक्षित करने के अलावा) के कार्यों के अन्य पहलुओं को व्यक्त करने के लिए शब्दावली प्रदान करते हैं। कार्य या शैली किस वर्ग या शैली (जैसे—उपन्यास, नाटक, कविता, निबन्ध, जीवनी, सिम्फनी, संगीत, सोनाटा, नक्शा, ड्राइंग, पेंटिंग, फोटोग्राफ, आदि) पर आधारित है।

"उन एलआईएस लेखक जिन्होंने दृश्य संसाधनों के विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया है, जैसे कि कलाकृतियाँ और तस्वीरें, अक्सर इस तरह के कार्यों की "विशिष्टता" और "नेसिटी" (विशिष्ट और सामान्य चित्रण या प्रतिनिधित्व) दोनों के बीच अन्तर करने के तरीके के बारे में चिन्तित हैं, (शटफोर्ड, 1986)। इस अर्थ में, "उपयोग" का ऊपर की तुलना में एक संकीर्ण अर्थ है। सैनफ्रांसिस्को में सूर्यास्त की एक पेंटिंग, उदाहरण के लिए, "सूर्यास्त" और (विशेष रूप से) होने के रूप में विश्लेषण किया है।

निष्कर्ष (Conclusion)

इस अध्याय में हमने अध्ययन किया कि इसमें ऐसे विषय को रखा जाता है जिसका किसी दूसरे विषय पर कोई प्रभाव नहीं होता है एवं इसको विस्तारपूर्वक जाना।

महत्वपूर्ण तथ्य (Important Terms)

1. रंगनाथन ने इसके वर्गीकरण को महत्वपूर्ण बताया है।
2. यह विचारों का एक संगठित निकाय है जिसमें विचार या कई चीजों का संयोजन हो सकता है।

अभ्यास प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न Very Short Answer Type Questions

1. दस्तावेज वर्गीकरण क्या है ?
2. अनुरोध उन्मुख वर्गीकरण क्या है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न Short Type Answer Questions

1. दस्तावेज वर्गीकरण पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न Long Answer Type Questions

1. स्वचालित दस्तावेज वर्गीकरण का सविस्तार वर्णन कीजिए।

UNIT 2

खण्ड-२
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



नोट-

यौगिक विषयों पर दस्तावेज वर्गीकरण Classification of Documents with Compound Subjects

प्रस्तावना

(Introduction)

इस अध्याय में हम Basic Subject में किसी दूसरे Subject के प्रभाव को उत्पन्न करते हैं, इसका अध्ययन करेंगे और सविस्तार से जानेंगे कि बेसिक विषय का अस्तित्व किस प्रकार बरकरार रहता है।

यौगिक विषय

(Compound Subject)

शब्द विषय अलग-अलग सन्दर्भों में अलग-अलग तरीकों को सहन करता है। सामान्य तौर पर, विषय सम्बन्धित पाठ या शीर्षक में बताए गए कार्य के किसी भी विषय या विषय को इंगित करता है या उसके संदेश में निहित होता है। पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में, विषय एक विशेष संज्ञान रखता है, क्योंकि इसके कुछ पहलुओं को विषयों के विषय के रूप में माना जाता है। उदाहरण के लिए, पुस्तकालय वर्गीकरण और लाइब्रेरी कैटलॉगिंग। यौगिक विषय की ब्रह्माण्ड के वंशज के रूप में कल्पना की जा सकती है, या यह कार्यों का खंडित रूप है। रंगनाथन ने ज्ञान से निपटने के लिए ज्ञान की पाँच प्रसिद्ध शाखाओं की पहचान की जो अध्ययन के मूल उद्देश्य के रूप में हैं। मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, विज्ञान और पुस्तकालय वर्गीकरण। विषय मनोविज्ञान ज्ञान के निर्माण में मन और मस्तिष्क में क्या होता है, इसकी जाँच करता है।

पुस्तकालय वर्गीकरण विशिष्ट विषयों के संगठन के साथ दोनों सूचना आयोजकों के साथ-साथ खोजकर्ताओं के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार के सहायक दृश्यों का समर्थन करने के लिए कुछ तार्किक क्रम में विशिष्ट विषयों के संगठन से सम्बन्धित है।

लाइब्रेरी कैटलॉगिंग में, हालांकि किसी आइटम को एक सेस पाइंट के रूप में एक या अधिक विषय शीर्षक दिए जाते हैं, जो विषय के आधार पर उसकी सामग्री का पता लगाने में सूचना खोजकर्ताओं की सहायता करते हैं। अनुक्रमण और अमूर्त सेवाओं में, किसी दस्तावेज की सामग्री का प्रतिनिधित्व करने के लिए निर्दिष्ट शीर्षक या शब्द विषय विवरणक कहलाते हैं। पुस्तकालय

अर्थ बनाते हैं।

है, जबकि कुछ अन्य का कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता है। वे केवल अन्य शब्दों के साथ मिलकर शब्द की अवधारणा के बारे में एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि कुछ शब्द कुछ अर्थ ले जाते सकी हैं।

द्वारा स्थापित किए जाते हैं। वे आमतौर पर सबसे छोटी इकाइयाँ होती हैं जो स्वयं उच्चारण कर सबसे छोटी, और लिखित रूप से इस तरह के रूप में विहित। व्यवहार में, शब्द विभिन्न मानदंडों उसी के अर्थ को निम्न प्रकार से बताता है—“परम्परागत रूप से एक वाक्य बनाने वाली इकाइयाँ में

6. कमान, आदेश, आदेश, आदेश वाक्य।

5. एक का वादा, आश्वासन या निम्नदर्शन बयान।

4. सदेश।

3. बात या कदम, टिप्पणी, बालीलाप, समाचार, खूबियाँ।

2. भाषण।

वाक्य।

और एक सदस्य के रूप में सेवा करने में सक्षम है, के पूरे, या एक विकल्प के लिए, एक भाषण का साधक तत्व बनते हुए, एक विचार या वैकल्पिक विचारों को व्यक्त करता है, से इसके दोनों और एक तरह के साथ दिखाए जाते हैं, लेकिन इसके भीतर कोई भी नहीं।

1. किसी भी खाने या खानियों के संयोजन (या उसके लिखित या मुद्रित प्रतीक, कस्टम रूप अर्थ बताए गए हैं—

द कक्षाएँ आक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ कंटेंट इंग्लिश नीचे सूचीबद्ध 'शब्द' के छह अलग-अलग

(Some Basic ideas on Compound Subject)

कुछ मौलिक विषय अवधारणाएँ (Some Basic ideas on Compound Subject)

विषय गठन प्रक्रिया की गुंथना करके लिंक का पता लगाने की कोशिश करते हैं।

अर्थात् पुस्तकालय और सूचना विज्ञान और भाषा विज्ञान। यह ध्रुव शब्द निर्माण प्रक्रिया के साथ के दायरे में आती है। इसलिए, इन दोनों विषयों के बीच कुछ लिंक नोट्स मौजूद होने चाहिए, उपरोक्त पाँच क्षेत्रों के दायरे में आती हैं, जबकि बाद के शब्द (शब्द) के लिए समान भाषा विज्ञान और शब्द। पूर्व शब्द (विषय) का विस्तार परीक्षा में पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के साथ-साथ दोनों के बीच एक अलग निकटता मौजूद होने चाहिए, अलग-अलग अवधारणाएँ, अर्थात् विषय में इच्छा कुछ विशेष का वर्णन करने के लिए कुछ शब्द या कीवर्ड शामिल होते हैं। इसलिए, इन एक अनियमित शब्दावली या व्युत्पन्न शब्द प्रणाली के माध्यम से समान होता है। विषय प्रतिनिधित्व या नियत अवधि प्रणाली के माध्यम से विषय पर प्रतिनिधित्व की इंगित करता है, जबकि बाद में विषय या सामग्री को निर्दिष्ट खोज शब्दों द्वारा दर्शाया जाता है। पूर्व का मामला नियमित शब्दावली शब्द या वर्णनकर्ता द्वारा दर्शाया जाता है।

सामग्री को विषय शीर्षक सूची या वर्गीकरण अनुसूची जैसे मानक विषय एकसूत्र में उपलब्ध या शीर्षकों आदि को संदर्भित करते हैं। कभी-कभी किसी विषय या पाठ या विषय के विषय या विज्ञान या पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में, विषय ज्यादातर सामयिक शब्दों या कुछ विवरणों



नीचे

(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संचालन : वर्गीकरण

खण्ड-२

किसी भी प्रयोग, अवलोकन और सीध के परिणाम कई तरीकों, रूपों और शैलियों में खुद को प्रकट कर सकते हैं, जो एक सिद्धांत, कुछ प्रक्रिया, घटना, आवेदन या अन्य हो सकता है। एक प्रयोग, अवलोकन और सीध के परिणाम यदि मानव मस्तिष्क में कुछ अच्छी तरह से

(Organisation Processing in library Science)

प्रत्येक कार्य विज्ञान में वर्गीकरण विषय वर्ण प्रक्रिया

संरचनात्मक पहलुओं की व्यापक किम्स है।

जबकि 'कूटशैली', 'और', 'कूटशैली' शब्द हैं। विभिन्न रूपों में कई प्रकार के शब्द हैं, जिनमें शब्द वे हैं जिनके लिए यह समभव नहीं है। इस प्रकार 'डार्कसम', 'और', 'डोरमैन', 'पारदर्शी' शब्द हैं। शब्द वे हैं जिनका अर्थ उनके भागों के अर्थ से निर्धारित किया जा सकता है, और अपारदर्शी शब्द वे हैं जिनमें, उल्लेखित दो प्रकार के शब्द, पारदर्शी और अपारदर्शी हैं। पारदर्शी अर्थ दर्शना व्यक्तित्व शाब्दिक-इकाइयाँ या तैक्सम के अर्थ से निर्धारित नहीं किया जा सकता नियम नहीं है। लेक्सिम के बीच सम्बन्ध एक शब्द का अर्थ निर्धारित करता है लेकिन एक शब्द का रूप में परिभाषित किया गया है लेकिन एक शब्द में अधिकतम संख्या में लेक्सिम के बारे में कोई लेक्सिम या सबसे छोटे लेक्सिकल सांख्यिक इकाइयों को एक अच्छी तरह से परिभाषित सेट के 'चाइल्ड', 'अर्थ' की इकाई बनाता है। इसलिए अपने अलग-अलग व्याकरणिक रूपों के साथ जो 'बच्चे', 'विद्यार्थी', 'बचपन', 'आदि जैसे अलग-अलग शब्द बनाता है, अतः अर्थ को जोड़ने वाला एक जाटिल प्रतिनिधित्व है। उदाहरण के लिए, 'चाइल्ड' एक लेक्सिम है, व्याकरणिक शब्द शामिल हैं। एक शब्दांश एक व्याकरणिक शब्दों के एक सेट के साथ एक एकल 'शब्द' में कई अलग-अलग भाषाओं की अवधारणाएँ शामिल हैं, जिसमें लेक्सिम, शब्द रूप और शब्दांशों की शीर्षक प्रदान करें। शब्दांशों में 'पता' और 'पता' के लिए दो शीर्षक नहीं होंगे।

इस नए तकनीकी शब्द का नाम 'लेक्सिस' था।

ने 'शब्द' को दूसरे तरीके से परिभाषित करने के लिए एक और नया तकनीकी शब्द प्रेश किया। है, जिसमें 'पता' और 'अतीत' दोनों शामिल हैं। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए, 'ब्रूमकोल्ड' मुश्किल था। 'देखा' शब्द में 'देखें' और 'अतीत' दोनों शामिल हैं। 'शब्द' के लिए भी यही सब तरह पद नामकीन 'शब्द' में 'पता' जैसे शब्दों के लिए अलग-अलग महापुरुषों को परिभाषित करना 'पसन्द' में दो तत्वों या महापुरुषों के अलग-अलग अर्थ होते हैं, 'और' 'अतीत' के शौकीन। इसी

'सादर' में 'ही' या 'सादर' और 'बाई'।

की ऐसी इकाई को दिया गया नाम 'मोरकम' था। मोरकम के उदाहरण हैं—'लाइक में 'ही' और एक तत्व को अर्थ की इकाई के रूप में भी परिभाषित किया गया है, जो शब्द से छोटा है। अर्थ

जिसे 1926 में एडगर द्वारा प्रेश किया गया था।

खड़ी हो सकती है। शब्द की इस अवधारणा को "न्यूनतम भूतल रूप" के रूप में जाना जाता है। 'शब्दों' को भाषण की सबसे छोटी सांख्यिक इकाई के रूप में सीधा जा सकता है जो स्वयं के द्वारा है, जबकि रूप शब्द व्याकरण के हैं और केवल व्याकरणिक निहितार्थ हैं।

उन्नीसवीं सदी के अंग्रेजी व्याकरण, जिन्होंने दो विशिष्ट प्रकार के शब्दों को परिभाषित किया, जैसे 'पूर्ण शब्द' और 'रूप शब्द'। पूर्ण शब्दों के उदाहरण हैं—फल, लाल, चुपचाप, मौख आदि और 'रूप शब्द', लेकिन, इसलिए और आदि पूर्ण शब्दों का अर्थ शब्दांशों में पाया जा सकता



नीट

(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संजाल : वर्गीकरण

खण्ड-२

या विषय गठन के तरीकों के बीच विभिन्न प्रकार के सम्बन्धों को मान्यता दी है।

विभिन्न विषयों का निर्माण करती है। विभिन्न विशेषज्ञों ने ज्ञान के ब्रह्माण्ड में किसी विषय के घटक विभिन्न खण्डों में विभाजित करने की आवश्यकता है, जो वर्गीकरण की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया विषयों के समूह का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है। इसलिए ज्ञान के एक सतत या ब्रह्माण्ड को केन्द्रित करता है जो किसी विषय का केन्द्र है। विचारों का एक संगठित समूह किसी व्यक्ति या संगठन है जिसमें ज्ञान और सूचना का प्रतिनिधित्व किया जाता है। ज्ञान एक विशेष इकाई को पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के सम्बन्ध में, ज्ञान का संगठन वास्तव में प्रलेखित संदेशों का प्यरोनॉटिकल इंजीनियरिंग का विषय बदल गया है।

संक्षिप्त किया जाता है। अन्तर्िक्ष युग के आगमन के साथ प्यरोनॉटिकल इंजीनियरिंग के रूप में पुस्तकालय और सूचना विज्ञान को कई मामलों में केवल सूचना विज्ञान/विज्ञान के रूप में अर्थव्यवस्था-पुस्तकालय का काम-पुस्तकालय विज्ञान।

से बदल जाता है। उदाहरण के लिए, हमारे देश का नाम इस तरह विकसित हुआ है-पुस्तकालय सेट से बना होता है-इतिहास : इतिहास काल। किसी विषय का नाम कभी-कभी विभिन्न कारणों द्वारा परिवर्तित होता है। यह नाम भौतिकी जैसे किसी एक कीवर्ड या भारत जैसे कीवर्ड के एक संकेत है। एक विषय को आम तौर पर एक नाम, एक संकेतन या अंकन, एक प्रतीक आदि एक विषय एकल, संयुक्त, मिश्रित, अतिव्यापी, क्लस्टर और अन्य प्रकार के खंडों से बना है। एक विषय ज्ञान के ब्रह्माण्ड का एक खंड है और एक खंड के पास सभी विशेषताओं का साथ है। ऊपर जो कुछ कहा गया है, उसे देखते हुए हमें इस प्रकार 'विषय' की एक नई परिभाषा दी गई है।

सोती द्वारा अवधारित होती है।

और प्रसारित की जाती है। प्राथमिक सोतों से जानकारी धीरे-धीरे समय के दौरान माध्यमिक नवजात विषय के लिए उपलब्ध है। सूचना के प्राथमिक सोतों के माध्यम से सभी जानकारी संवित दौरान माध्यमिक सोतों द्वारा अवधारित होती है। जानकारी के माध्यमिक सोत शायद ही किसी जानकारी संवित और प्रसारित की जाती है। प्राथमिक सोतों से जानकारी धीरे-धीरे समय के शायद ही किसी नवजात विषय के लिए उपलब्ध है। सूचना के प्राथमिक सोतों के माध्यम से सभी धीरे-धीरे समय के दौरान माध्यमिक सोतों द्वारा अवधारित होती है। जानकारी के माध्यमिक सोतों के माध्यम से सभी जानकारी संवित और प्रसारित की जाती है। प्राथमिक सोतों से जानकारी के माध्यमिक सोत शायद ही किसी नवजात विषय के लिए उपलब्ध है। सूचना के प्राथमिक सोतों नवजात विषय के विचारों को आम तौर पर व्यवस्थित या व्यवस्थित नहीं किया जाता है। जानकारी में, किया जाता है और कई मामलों में विषय को एक नाम दिया जाता है। इसलिए शुरूआत में, समीक्षा पर या एक पुस्तक लिखी जाती है जहाँ विषय से सम्बन्धित विचारों को और व्यवस्थित लगाता है। बाद में एक मंच पर, बिखरे हुए साहित्य को चमकया जाता है, जांचा जाता है, और एक अलग-अलग पत्रिकाओं, सम्मेलन की कार्यवाही और इतने पर बिखरे हुए तरीके से दिखाई देने शीघ्रता इस पर काम करना शुरू कर देते हैं, और विषय बढ़ने लगता है। विषय पर साहित्य समय यह ज्ञान नहीं है कि विषय आगे बढ़ेगा या नहीं। यदि यह निहित होता है, तो अधिक संकलित संवार, या किसी विशेष समय में सम्मेलन की कार्यवाही आदि के रूप में होता है। उस के अवधारणा स्थान में स्थापित होता है। एक विषय का जन्म आम तौर पर एक शोध पत्र, एक परिभाषित आकार में किसी तार्किक इकाई का निर्माण करता है, तो एक विषय मानव मस्तिष्क



(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संग्रहण : वर्गीकरण

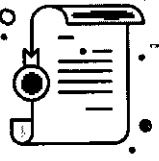
खण्ड-२

असंबन्धित विचारों के एक संगठित सेट के रूप में, जिसका विस्तार और गहनता की विशेषताओं के अभाव में और आम से बौद्धिक क्षेत्र के भीतर और एक सामान्य व्यक्ति के अपरिहार्य विशेषज्ञता के क्षेत्र में सुसंगत रूप से गिरने की सम्भावना है। किसी विषय का विस्तार कई संस्करणों में एक वर्ग पर, या केवल एक भाग में, या आवाधिक में एक लेख, या एक भाग, या एक अध्याय, या एक पुस्तक के एक खंड में विस्तारित हो सकता है, या यहाँ तक कि दूसरे वर्ग पर एक खंड के रूप में। बहु-मात्र दस्तावेज से एकल खंड तक, यह किसी विषय के उपयुक्त प्रकटीकरण के लिए सीमा है, अर्थात् बहु-मात्र दस्तावेज किसी विषय से सम्बन्धित हो सकता है और एक एकल खंड भी एक ही विषय से सम्बन्धित हो सकता है। उन्हीं विषय को आभिव्यक्ति के स्तरों से तीन मुख्य वर्गों में वर्गीकृत किया गया और छोट-अन्तर, तथा विशाल। यह वर्गीकरण हालाँकि अत्यधिक व्यक्तिपरक है और अच्छी तरह से परिभाषित जैसे माइक्रो विषय, माइक्रो सल्वेट और स्पॉट सल्वेट उनके अर्थ के सापेक्ष नियम हैं जो शिथिलता से निर्धारित होते हैं। स्थूल विषयों की श्रेणी से लेकर सूक्ष्म विषयों तक के परिवर्तन को स्पर्श में लेना विषय के बीच अन्तर करना विकल्प भी सम्भव नहीं है। किसी विषय के निष्कासन के स्तर को परिभाषित करने के लिए बहुरूपी कारण हैं। उदाहरण के लिए, आज का विषय भविष्य में स्थूल सल्वेट का एक स्तर नहीं है। किसी विषय के निष्कासन के स्तर को विषयों के लिए उपयुक्त उदाहरणों का पता लगाना सम्भव है लेकिन मैक्रो, माइक्रो या स्पॉट यह वर्गीकरण हालाँकि पिछले एक की तुलना में अधिक उद्देश्यपूर्ण है। बुनियादी, मिश्रित या जटिल (दो या दो से अधिक विषयों को जोड़कर या उनमें कुछ सम्बन्धों के आधार पर गठित विषय। विषय के साथ एक विषय और घटक के रूप में एक या अधिक पृथक विचार) और जटिल विषय

रचना के दृष्टिकोण से, इस विषय को भी तीन मुख्य समूहों में वर्गीकृत किया गया था, अर्थात् मूल विषय (एक घटक के रूप में किसी भी अलग विचार के बिना एक विषय), मौलिक विषय (मूल विषय के साथ एक विषय और घटक के रूप में एक या अधिक पृथक विचार) और जटिल विषय। रचना के पाँच तरीकों का वर्णन किया है। डिसेम्बर, जैमिन्शन, डैन्यूडेशन, लॉन असंबल और सुपरइम्पोजिशन। विच्छेदन की प्रक्रिया का अर्थ है समन्वय की स्थिति के कुछ हिस्सों में संस्थाओं का एक बड़ापुंड-कटना। जब भागों को रक दिया जाता है, तो वे एक सारणी बनाते हैं। सारणी की तरह, पाँचों को खिलाने तथा उत्तेजक पाँचों जब बड़ापुंड का निर्माण होता है कृत्रिम संयन्त्र विच्छेदित है। लेमिन्शन प्रक्रिया में घटने पर परतें का आवरण करके निर्माण का संकेत देती हैं। जब मूल परत एक मूल विषय है और अन्य परतें अलग-अलग विचार हैं, तो एक यौगिक विषय बनता है; जैसे-विषयों का गठन, भारतीय युवा (बुनियादी परत एक बुनियादी विषय है), इस श्रेणी के अन्तर्गत आता है। डैन्यूडेशन मनाविज्ञान (बुनियादी परत एक बुनियादी विषय है), इस श्रेणी के अन्तर्गत आता है। डैन्यूडेशन एक मूल विषय या एक अलग विचार के विस्तार (या गहराई) के विस्तार की प्रमाणात्मक कमी है। इस श्रेणी के उदाहरणों में विषय निर्माण जैसे दहनार्थ शामिल हैं।

इकाई हो सकता है और इसके विपरीत भी। यह व्यक्तिगत और सन्दर्भों पर भी भिन्न होता है। रचना के दृष्टिकोण से, इस विषय को भी तीन मुख्य समूहों में वर्गीकृत किया गया था, अर्थात् मूल विषय (एक घटक के रूप में किसी भी अलग विचार के बिना एक विषय), मौलिक विषय (मूल विषय के साथ एक विषय और घटक के रूप में एक या अधिक पृथक विचार) और जटिल विषय। रचना के पाँच तरीकों का वर्णन किया है। डिसेम्बर, जैमिन्शन, डैन्यूडेशन, लॉन असंबल और सुपरइम्पोजिशन। विच्छेदन की प्रक्रिया का अर्थ है समन्वय की स्थिति के कुछ हिस्सों में संस्थाओं का एक बड़ापुंड-कटना। जब भागों को रक दिया जाता है, तो वे एक सारणी बनाते हैं। सारणी की तरह, पाँचों को खिलाने तथा उत्तेजक पाँचों जब बड़ापुंड का निर्माण होता है कृत्रिम संयन्त्र विच्छेदित है। लेमिन्शन प्रक्रिया में घटने पर परतें का आवरण करके निर्माण का संकेत देती हैं। जब मूल परत एक मूल विषय है और अन्य परतें अलग-अलग विचार हैं, तो एक यौगिक विषय बनता है; जैसे-विषयों का गठन, भारतीय युवा (बुनियादी परत एक बुनियादी विषय है), इस श्रेणी के अन्तर्गत आता है। डैन्यूडेशन मनाविज्ञान (बुनियादी परत एक बुनियादी विषय है), इस श्रेणी के अन्तर्गत आता है। डैन्यूडेशन एक मूल विषय या एक अलग विचार के विस्तार (या गहराई) के विस्तार की प्रमाणात्मक कमी है। इस श्रेणी के उदाहरणों में विषय निर्माण जैसे दहनार्थ शामिल हैं।

इकाई हो सकता है और इसके विपरीत भी। यह व्यक्तिगत और सन्दर्भों पर भी भिन्न होता है। रचना के दृष्टिकोण से, इस विषय को भी तीन मुख्य समूहों में वर्गीकृत किया गया था, अर्थात् मूल विषय (एक घटक के रूप में किसी भी अलग विचार के बिना एक विषय), मौलिक विषय (मूल विषय के साथ एक विषय और घटक के रूप में एक या अधिक पृथक विचार) और जटिल विषय। रचना के पाँच तरीकों का वर्णन किया है। डिसेम्बर, जैमिन्शन, डैन्यूडेशन, लॉन असंबल और सुपरइम्पोजिशन। विच्छेदन की प्रक्रिया का अर्थ है समन्वय की स्थिति के कुछ हिस्सों में संस्थाओं का एक बड़ापुंड-कटना। जब भागों को रक दिया जाता है, तो वे एक सारणी बनाते हैं। सारणी की तरह, पाँचों को खिलाने तथा उत्तेजक पाँचों जब बड़ापुंड का निर्माण होता है कृत्रिम संयन्त्र विच्छेदित है। लेमिन्शन प्रक्रिया में घटने पर परतें का आवरण करके निर्माण का संकेत देती हैं। जब मूल परत एक मूल विषय है और अन्य परतें अलग-अलग विचार हैं, तो एक यौगिक विषय बनता है; जैसे-विषयों का गठन, भारतीय युवा (बुनियादी परत एक बुनियादी विषय है), इस श्रेणी के अन्तर्गत आता है। डैन्यूडेशन मनाविज्ञान (बुनियादी परत एक बुनियादी विषय है), इस श्रेणी के अन्तर्गत आता है। डैन्यूडेशन एक मूल विषय या एक अलग विचार के विस्तार (या गहराई) के विस्तार की प्रमाणात्मक कमी है। इस श्रेणी के उदाहरणों में विषय निर्माण जैसे दहनार्थ शामिल हैं।



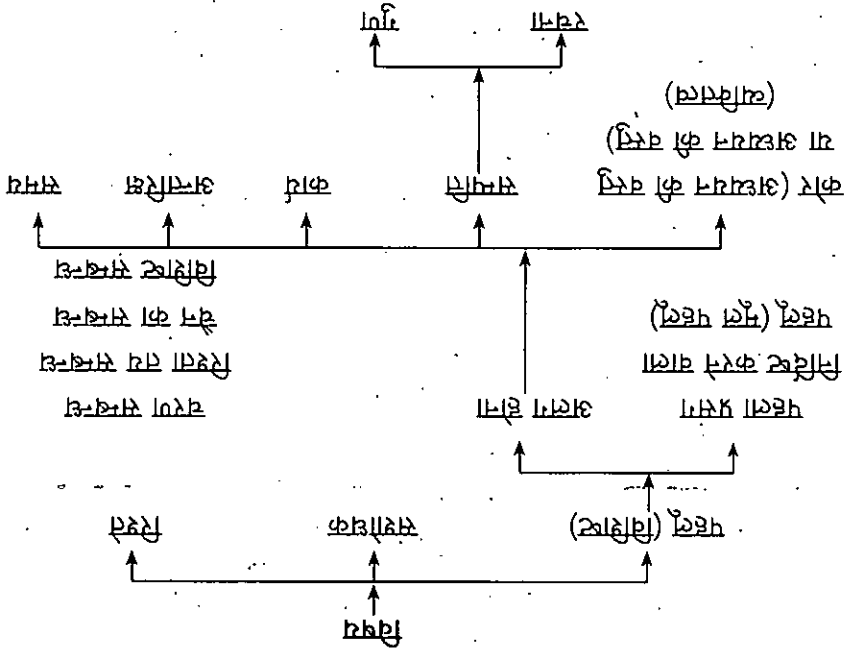
नीट-

(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संजाल : वर्गीकरण

२५०६-२

चित्र : नीलमधन द्वारा विकसित विषय का सामान्यीकृत परदेस संरचना




शाब्द गठन और विषय गठन

मॉडल में आकार दिया जा सकता है। नीलमधन द्वारा विकसित किया गया है। इस संरचना को विभिन्न विषयों के लिए विशेष का सामान्यीकृत ढांचा विकसित किया गया है। नीलमधन द्वारा चित्र में दिखाए गए अर्जुनार विषयों परिचित भाषाविदों के कारणों में विस्तृत है। नीलमधन द्वारा चित्र में दिखाए गए अर्जुनार विषयों रूपों की खोज में एक समानता है, जो कि वास्तविक, कांडर, कांडर और जैनेरिक व्याकरण जैसे उन्हीं बलाया कि संरचित विषयों के लिए एक सामान्य ढांचे के निर्माण में सार्वभौमिक भाषाई नीलमधन द्वारा सार्वभौमिक भाषाई रूपों के साथ विषय निर्माण प्रक्रिया की तुलना की गई थी। सामाजिक विज्ञान आदि जैसे व्यापक विषयों का निर्माण होता है। विज्ञान, संकल्पम जो विज्ञान जैसे विषय इस श्रेणी में आते हैं। समूह प्रक्रिया में प्राकृतिक विज्ञान, किया जाता है और अलग से आसवन की प्रक्रिया में गए विषयों का निर्माण होता है। प्रबंधन कुछ सामान्य पदार्थों की विषयों के बहाल या किसी भी व्यापक अनुशासन से किस्टलीकृत आसवन और एकत्रीकरण पर प्रक्रियाएँ पूरी तरह से नई हैं और रंगानाथन द्वारा वर्णित नहीं हैं। का उत्पादन आदि।

अध्ययन, गाँधीवादी अध्ययन आदि) और इकाई अध्ययन (मूदा विज्ञान, समूह विज्ञान, मिसाइल किया गया है। अध्ययन (उदाहरण इंडोलाजी, निपानीलाजी आदि), व्यक्ति अध्ययन (टीगोर के सुपरपोजिशन के अनुक्रम है, लेकिन क्लस्टर प्रक्रिया में विषय गठन को तीन वर्गों में वर्गीकृत विज्ञान, समाजशास्त्र आदि इस श्रेणी से सम्बन्धित है। क्लस्टर प्रक्रिया कुछ हद तक रंगानाथन और विलय प्रक्रिया सिर्फ इसके विपरीत है, विखंडन का गठन विषयों और रसायन, ज्योतिष आसवन, समूह और क्लस्टर। यहाँ विखंडन प्रक्रिया रंगानाथन के अनुक्रम है, विखंडन प्रक्रिया के निम्नलिखित सात तरीकों को सामने रखा—रंग अर्थवत्त, वैमिथान, विखंडन, संलयन, गोपीनाथ और सीताराम ने रंगानाथन के विचार पर और शोध किया और विषयों के गठन

नोट-



(प्रयोगात्मक)
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
खण्ड-२

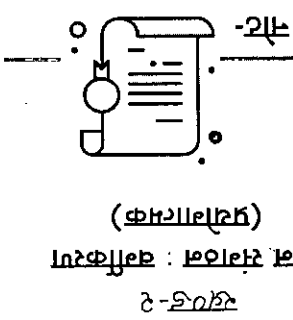
सिद्धान्त, दुर्लभ, पृथ्वी, अद्ययन, वान्त्वाका नोटबक आदि ब्लोक होता सिद्धान्त न वा किसी प्रकार है। विषय गठन से मिलते-जुलते उदाहरणों में शामिल है, ब्लैकबोर्ड श्यामी, कर्मी तरल, स्टर्लिंग कोई वैज्ञानिक आसपास का क्षेत्र नहीं है टूटना या तैज। यहाँ घटकों के भीतर अर्थ निहित नहीं है-नाइला, निकपाकेट, पंपबैक, एगडैट पूंजी तरह से नई अवधारणा (एक मौजान) जिसमें या तो ocean एक्सपैट्रिक कम्पाउडिंग के रूप में जाना जाता है। इस तरह ये कम्पाउडिंग के उदाहरण A, न ही B, बल्कि पूंजी तरह से एक नया विषय व्यक्त करता है। इस तरह की कम्पाउडिंग को अन्य संयोजन, (A + B) एक विशेष प्रकार का एक अपमानित शब्दांश इंगित करता है, जो न तो **कस 2 :** $(P + Q) \Rightarrow R$, जहाँ P # एमपी # एन, पी # (M + N) या M & N का कोई भी सम्बन्धित है। रसायन विज्ञान लेकिन कोई अंग वगैरह नहीं।

पूरा शरीर विज्ञान, शारी सम्बन्धित आदि कार्बनिक रसायन शास्त्र की एक विशेष शाखा से अर्थ यहाँ घटकों के भीतर ही है। का नहीं अन्धेरा। इस तरह की कम्पाउडिंग को 'एंडोटेरिक कम्पाउडिंग' के रूप में जाना जाता है। लेकिन पूरा शब्द अन्धेरा कम्पाउडिंग का संकेत देता है कम्पाउडिंग, लेकिन किसी भी तरह मूल शब्दों से बनता है। अन्धेरा तथा कम्पाउडिंग (कम्पाउडिंग) और बी के रूप में माना जा सकता है। अन्धेरा, कृत्वौल, उन्मत्त, उन्मत्त, उन्मत्त, उन्मत्त के लिए, शब्द अन्धेरा कम्पाउडिंग केवल N है, लेकिन M (M +) नहीं एन। इस तरह ये कम्पाउडिंग के उदाहरण है।

कस 1 : $(P + Q) \Rightarrow R$, यानि (P + Q) एक इंगित करता है, B का विशेष प्रकार, जिसका अर्थ मान लीजिए, A का अर्थ M है, और B का N है। उसके बाद निम्नलिखित कस हो सकते हैं- शब्द को निकाल करत है, अर्थात् A & B के संयोजन के रूप में (A +)। है जो दो अलग-अलग प्राथमिक शब्दिक इकाइयों या जहाँ से बनता है, अर्थात् A और B यौगिक शब्द बनता है। यौगिकों में विभिन्न रूपों में तने भी हो सकते हैं। अब, हम एक यौगिक शब्द कहते लेकिन रूप था है अलग है। एक से अधिक प्राथमिक शब्दिक इकाइयों या जहाँ का अन्गव यौगिक childhood, बचकाना, बचपन, आदि सभी तने शब्दों का केंद्रीय विषय जड़ शब्द के समान है। उपसर्ग या प्रत्यय हो सकता है।

तना शब्द के एक भाग को इंगित करता है, जो अपने अर्थ में एक नया रूप जोड़ने के लिए एक सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं को बहान करता है और इसे छोटे घटकों में नहीं घटमा जा सकता है। किसी शब्द की प्राथमिक शब्दिक इकाई शब्द के रूप में जानी जाती है। यह शब्दांश सामग्री के (2) एंडोटेरिक कम्पाउड, (3) मैथन यौग्य कम्पाउड और (4) अपोविशन कम्पाउड।

यौगिक शब्दों को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है अर्थात् (1) एक्सट्रिक कम्पाउड, 2. तना शब्द, 3. यौगिक शब्द। पहलु के दृष्टिकोण से एक शब्द को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है-1. मूल शब्द, किया जा सकता है, हालाँकि कभी-कभी शब्द बहू-शब्द वाक्यांशों से बन सकते हैं। संरचनात्मक के रूप में देख सकता है। शब्द गठन को मुहोवरेदार आभिव्यक्तियों के गठन के साथ भी विपरीत शब्द के नए उपयोग के रूप में क्या देखता है, दूसरा व्यक्ति किसी पुराने शब्द से प्राप्त नए शब्द की रेखा गठन और अर्थ परिवर्तन कभी-कभी थोड़ा घुंघला ही जाता है; एक व्यक्ति किसी पुराने शब्दांश परिवर्तन के विपरीत होता है, जोकि एक शब्द के आरम्भ में परिवर्तन है। शब्द के बीच भाषा विज्ञान में, शब्द गठन एक नए शब्द के निर्माण का संकेत देता है। शब्द गठन कभी-कभी



(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संग्रहण : वर्गीकरण

खण्ड-१

वृत्तियाँ विषय को उनके द्वारा "एक घटक के रूप में किसी भी अलग विचार के बिना एक विषय" के रूप में परिभाषित किया गया था। वृत्तियाँ विषयों के उदाहरण हैं—भौतिकी, गणित, रसायन विज्ञान आदि। यौगिक विषय को "मूल विषय के साथ एक विषय और घटकों के रूप में एक या अधिक पृथक विचारों" के रूप में परिभाषित किया गया था। यौगिक विषयों के उदाहरण हैं—उनीसवीं शताब्दी में भौतिकी का विकास, भारत में रसायन विज्ञान की अनुसंधान प्रवृत्ति आदि। जटिल विषय को परिभाषित किया गया था "दो या दो से अधिक विषयों को जोड़कर या उनके बीच कुछ सम्बन्ध के आधार पर युग्मित किए गए विषय"। उदाहरण हैं भौतिक विज्ञानियों के लिए गणित, भौतिकी और रसायन विज्ञान के बीच अन्तर, भू-राजनीति आदि।

3. Complex subject।

2. यौगिक विषय

1. मूल विषय

रसायन द्वारा वर्गीकृत विषय निम्नलिखित हैं—

और प्रकाश की ध्वनि और ध्वनिकी।
आदि। कभी-कभी किसी विशेष विषय को कई नामों से जाना जाता है, उदाहरण के लिए प्रकाश से उदाहरण गठन शामिल, प्रकाशिकी/प्रकाश, ध्वनिकी/ध्वनि जीवाश्म विज्ञान/जीवाश्म विज्ञान विशेष व्यक्ति (दो नहीं) जो एक साथ प्रबन्धक और निर्देशक के रूप में भी कार्य करते हैं। विषय माना जा सकता है, जबकि पूरा शब्द प्रबन्ध संचालक एक इंगित करता है।

प्रबन्ध संचालक दो मूल शब्दों से बनता है, प्रबन्ध तथा निर्देशक (क्रमशः ए और बी के रूप में संव्यस्त खिलौना, खिलौना-काच, छान-कायकला, गायक-अभिनेता, उदाहरण के लिए, शब्द इस तरह की कम्पाउण्डिंग को 'अपवर्धित कम्पाउण्डिंग' के रूप में जाना जाता है।

विवरणों को दर्शाता है।

कस 4 : (ए + बी) ⇒ आर, जहाँ आर = एम = एन, यानी (ए + बी) एक ही के विभिन्न

और इसी तरह अन्य।

सामग्री के दृष्टिकोण से दोनों के कुल योग को पता चलता है जीवविज्ञान तथा रसायन विज्ञान भूभौतिकी, वैश्व भौतिकी, समाजशास्त्र आदि शामिल हैं। उदाहरण के लिए, विषय जीव रसायन भी अर्थ घटकों के भीतर निहित है। विषय गठन के उदाहरणों में वैश्व रसायन, खगोल विज्ञान, जबकि पूरा शब्द किताबों की दुकान पुस्तक के भंडार के अलावा और कुछ नहीं दर्शाता है। यहाँ मूल शब्दों से बनता है। पुस्तक तथा दुकान (क्रमशः ए और बी के रूप में माना जा सकता है), बुकस्टोर, अंडेशन, स्वीपवॉक, पलक, अखबार उदाहरण के लिए, शब्द किताबों की दुकान दो जाता है।

ए और बी के कुल योग। इस तरह की कम्पाउण्डिंग को 'संयुक्त-योग्य कम्पाउण्डिंग' के रूप में जाना

कस 3 : (ए + बी) ⇒ (M + N), अर्थात् (A + B) निकटित करता है।

करता है।

फर्मा से सम्बन्धित है जो पर्याप्त रूप से कम तापमान पर धातुओं की सामान्य स्थिति का वर्णन एनरिको फर्मी या किसी भी तरल के बारे में कुछ भी शामिल नहीं है। यह विषय अन्तःक्रियात्मक विषय है घटना खगोल भौतिकी के सन्दर्भ में। इसी तरह फरमाइशी तरल पदार्थ में भौतिक विज्ञानी के कावेपन या रंग से सम्बन्धित है और न ही किसी प्रकार के छेद से। इस विषय का कर्नाय



नीट-

(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संतान : वर्गीकरण

खण्ड-२

है। इस प्रक्रिया की प्रमुख विशेषताओं में से एक सजा का मौखिकीकरण है, जैसे क्रिया का बनना यह पहले से मौजूद शब्द को वाक्य या वाक्य श्रृंखला में परिवर्तित करके नए शब्द बनाने की प्रक्रिया कहते हैं, एक नई मिल सकता है जीव विज्ञान।

जैव रसायन, खगोल विज्ञान, समाजशास्त्र, भूगोलिकी, वैश्व भौतिकी आदि विषय में जैव रसायन की प्रक्रिया के साथ अनुकूलता किया जा सकता है। संलयन प्रक्रिया के माध्यम से गठित विषय है के पुराने शब्द की विशिष्ट विशेषताएँ विशिष्ट रूप से मौजूद नहीं होती हैं। इसलिए इस प्रक्रिया दो अलग-अलग शब्दों को एक नया शब्द बनाने के लिए फ्यूज किया जाता है, जहाँ पुराने समय यौगिक, संयोजन करमा यौगिक तथा परिशिष्ट यौगिक, जिसकी वधा पहले ही की जा चुकी है। यहाँ, प्रकृत-निर्देशक, आदि चार प्रकार के यौगिक शब्द हैं, अर्थात् एंजाइमिक यौगिक, निर्वासन जाता है, जैसे-भूकम्प (पृथ्वी + भूकम्प), डाकू रूम (डाकू + कमरा), पंपरबैक ब्रुकस्टोर, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पुराने विषयों को एक साथ जोड़कर एक यौगिक शब्द बनाया

कम्पोजिशन

हिन्दुस्तानी संगीत के माध्यम से बंगाली संगीत, इस्लाम पर डेसाई धर्म का प्रभाव आदि। राजनीति विज्ञान और अध्यात्म, शरीर रचना और शरीर विज्ञान के बीच तुलनात्मक अध्ययन, कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -

है। इसका अलावा, घटक विषयों की विशिष्ट विशेषताएँ परिणामी विषय में अपरिवर्तित रहती हैं। विचार विधानसभा के घटकों के बीच कुछ रिश्तों को व्यक्त करने के लिए एक साथ इकट्ठे होते जा सकता है। डीना संयोजन, जहाँ दो या दो से अधिक सरल या मिश्रित विषय या अलग-अलग मंडिकल लाइवैरी, विज्ञान संकाय आदि। शब्द निर्माण की इस विधा को इस प्रक्रिया के साथ जोड़ा इस प्रक्रिया से बनने वाले शब्द हैं अणु शब्द। अंग्रेजी भाषा में अन्य उदाहरण भी हैं, जैसे कि का स्वतन्त्र अस्तित्व पूरी तरह से निहित है। वे शब्दांश के समान हैं, लेकिन वाक्य रचना के नहीं। तरह से अलग संस्थाएँ हैं। एक शब्द दूसरे शब्द से केवल अर्थ लेने से बनता है, लेकिन दो शब्दों के लिए, दो शब्द एंटीथेसिस तथा एंटीकोपर केवल अर्थ के वृद्धिकोण से समान हैं, लेकिन वे पूरी का स्वतन्त्र अस्तित्व प्रमुख है। विभिन्न भाषाओं के शब्दों के बीच का सम्बन्ध कमजोर है, उदाहरण लिए किसी भी तरह से समानांतर नहीं किया जाता है, लेकिन सभी मामलों में सभी घटक शब्दों शब्द केवल अर्थ माध्यम से सम्बन्धित है। विभिन्न भाषाओं के शब्दों को नए शब्दों को बनाने के जा सकता है; जैसे-तना शब्द = जड़े शब्द + शब्द तना और दो अलग-अलग भाषाओं के दो मूल शब्द मूल विषयों से मिलते-जुलते हो सकते हैं। तन शब्दों की यौगिक विषयों के साथ जोड़ा नए अभिविन्यास की ओर इसके अर्थ को सम्बोधित करने के लिए फिट हो सकते हैं। इस प्रकार किसी स्वतन्त्र और साधक शब्द का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं, लेकिन किसी शब्द के साथ एक अलग-अलग विचारों की परिभाषा से इस शब्द उपजी के साथ मिलाया जा सकता है, क्योंकि तने सम्पत्ति तथा लयीका।

(PMEST)। मौलिक श्रृंखला मानना आगे तीन वर्गों में विभाजित किया गया था, अर्थात् सामग्री श्रृंखला में अलग-थलग विचारों को वर्गीकृत किया, व्यक्तिगत पदांश, ऊर्जा, आन्तरिक तथा समय भी जाना जाता है। सिद्धान्त, शाब्कशा, अनुसंधान, आवाधिक आदि रचनाएँ नए पार्व मौलिक के लिए किसी भी विषय के साथ फिट हो सकते हैं। आइसोलेट्स को फर्म सबोवेट के रूप में जो स्वयं किसी भी विषय का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं, लेकिन इसे नए आकार और आयाम देने पृथक विचारों को अस्तित्व विचारों या विचार-परिसरों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है



नीचे

(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संग्रहण : वर्गीकरण

खण्ड-२

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न Long Answer Type Questions

1. रंगान्धन के द्वारा यौगिक विषयों का अध्ययन किस प्रकार किया गया है? सविस्तार सक्षिप्त वर्णन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न Short Answer Type Questions

1. यौगिक विषय क्या है?
2. यौगिक विषयों को किस प्रकार वर्गीकृत किया जाता है?

अति लघु उत्तरीय प्रश्न Very Short Answer Type Questions

अवधारणा प्रश्न

1. यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पुराने विषयों को एक साथ जोड़कर यौगिक विषय बनाया जाता है।
2. यौगिक विषय में ऐसे विषय को रखा जाता है जो किसी Basic subject में किसी isolate के प्रभाव से उत्पन्न होते हैं।

(Important Terms)

अवधारणा प्रश्न

इस अध्याय में हम वैज्ञानिक संज्ञावत् का अस्तित्व बरकरार रखते हैं तथा किसी अन्य विषय या isolate से प्रभावित होता है इसका अध्ययन किया गया है।

(Conclusion)

निष्कर्ष

तथा Google करने के लिए समान है, केवल वाक्यात्मक उपयोग अलग है। केन्द्रीय विषय शब्दकोश तथा कोश रचना समरूप है, इसी तरह, दोनों का केन्द्रीय विषय गुण रूप को विशेष में आकार दिया जाता है, लेकिन मूल अवधारणा अपरिवर्तित रहती है। दोनों का विकसित किया जाता है, जैसे-वैज्ञानिकों, लेखकों, पत्रकारिता आदि यहाँ अलग-थलग से किसी भी रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। कभी-कभी किसी विषय को आधार बनाते हुए विषयकोश, समय-समय पर ग्रन्थ सूची, शोध रिपोर्ट आदि। किसी विषय से सम्बन्धित विषय इनमें लिए, अलग-अलग विद्यार्थी के ब्रह्माण्ड में बहते सारे फॉर्म आइसोलेट्स मौजूद हैं, जैसे शब्दकोश, एक विशेष रूप के आधार पर किसी विशेष विषय के विकास का वर्णन करता है। उदाहरण के

किया गया है। शब्द की वाक्यात्मक श्रेणी केवल बदली हुई है। इस प्रक्रिया में कोई नया शब्द नहीं बनाया गया है, लेकिन पुराने शब्द का नए तरीके से इस्तेमाल आदि कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं—

इस मौजूदा विशेषण से, महावरा द्वारा करने के लिए बोलें तो पर्यायवाची के अर्थों में विषय। कई प्रकार के रूपान्तरण हैं, अर्थात् किया के लिए सजा या सजा को किया, या किया के विशेषण



नीचे-

(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संचालन : वर्गीकरण

खण्ड-२

प्रकार की विशेषताओं को मान्यता प्रदान कर इन्हें विन्दित पक्ष (Amplified Facet) कहा है। इसी के साथ किसी विषय के कुछ उप-खण्ड विशेष वर्ग बन जाते हैं। जहाँ रचनात्मक नै इन दोनों दृष्टिकोण से अलग माना गया है। अतः इनके लिए वर्गीकरण में विशेष व्यवस्था अनिवार्य है। प्रणालियाँ उपचार के लिए अपनायी गयी हैं। इन सभी का उद्देश्य एक ही है और भी विभिन्न विकिसंशोधन के अन्तर्गत होमियोग्रैफ़ी, यूनानी, आर्युर्वेद, एनोपैथी तथा प्राकृतिक विकिसंशोधन (Special) और प्रणाली (System) की सजा दे दी गयी है।

(School of Thoughts) कहा जाता था परन्तु 1952 में इस पद और धारणा को वैश्वीकरण पर द्विविन्दु वर्गीकरण में प्रारम्भ से ही रही है। प्रारम्भिक अवस्था में इसे 'स्कूल ऑफ थॉट्स' प्रकार की धारणा विचार स्तर (Idea Plan) और अंकन स्तर (Notational Plan) दोनों स्तरों अनेक प्रणालियों और दृष्टिकोणों से अध्ययन करना है और तदनुसार व्यवहार में लाना है। इस उदाहरण के लिए विकिसंशोधन को देखें तो उसका उद्देश्य मानव स्वास्थ्य और योग-उपचार को उत्तमका आधार वर्ग है।

अतः मुख्य वर्ग का स्थान प्राप्त करने का पर्याप्त आधार भी होता है परन्तु उनका आधार विषय गया है। आवश्यकता के दृष्टिकोण से प्रचुर मात्रा में इन विषयों पर सामग्री उपलब्ध की गयी है। Classes) में कुछ ऐसी वैश्वीकरण एवं प्रणालियाँ प्रचलित हैं जिनको एक पृथक वर्ग का रूप दिया जाना-जाना के कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जिनके अन्तर्गत परम्परागत मुख्य वर्गों (Traditional Main

(Classification of Documents with Compound Subject)

यौगिक विषय के साथ दस्तावेज वर्गीकरण

अन्तर्गत हम सामान्य एकल विशेष एकल पक्ष विशेषण आदि का अध्ययन करेंगे। इसका इस अध्याय में हम यौगिक विषय के दस्तावेज वर्गीकरण के बारे में अध्ययन करेंगे। इसके

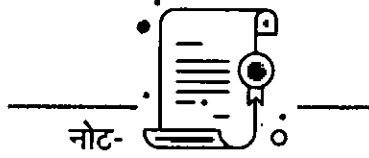
(Introduction)

प्रस्तावना

भिन्न विषयों पर दस्तावेज वर्गीकरण
Classification of Documents with
Complex Subject



खण्ड-३
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



शाब्दिक स्तर पर इनको विशिष्ट (Specials) और प्रणाली (Systems) कहा गया है। एक वर्ग के दृष्टिकोण से विचार करने पर प्रणाली (System) को विन्यस्त आधार वर्ग (Amplified Basic Class) कहा गया है।

सामान्य एकल (Common Isolates)

ज्ञान जगत के समस्त एकल विचारों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

1. विशिष्ट एकल
2. सामान्य एकल।

1. विशिष्ट एकल (Special Isolates)—ज्ञान के प्रत्येक मुख्य वर्ग की अपनी अलग-अलग विशेषतायें हैं तथा इन विशेषताओं के प्रतिनिधित्व करने वाले एकलों को विशिष्ट एकल कहते हैं।

उदाहरण—पुस्तकालय विज्ञान वनस्पति शास्त्र में एकल संख्या 2 का प्रयोग अलग-अलग तरीके से हुआ है।

Library Science—2 (Public Library)

Botany—2 (Thallophyta)A

2. सामान्य एकल (Common Isolates)—सामान्य एकल वे एकल हैं जिनका प्रयोग किसी भी मुख्य वर्ग के साथ क्यों नहीं किया जाये हमेशा एक ही रूप में रहते हैं। डॉ. रंगनाथन ने सामान्य एकलों को इस प्रकार बताया है—

“जिस एकल को समस्त संयुक्त विषय अथवा मूल विषय में से किसी के साथ संलग्न किया जा सकता है जिसके अलग एकल अंक से किसी एक ही प्रकार का अर्थ व्यक्त होता है अर्थात् एक ही प्रकार की धारणा की अभिव्यक्ति होती है तथा जिसका वर्गांक में एक ही प्रकार का कार्य है, उसे सामान्य एकल कहते हैं।”

उदाहरण—a (Bibliography) एकल का प्रयोग किसी भी मुख्य वर्ग के साथ क्यों नहीं किया जाये हमेशा एक ही रूप में होता है—

1. Bibliography of Mathematics

Ba

2. Bibliography of Library Science

2a

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति

(Common Isolates in Colon Classification)

डॉ. रंगनाथन ने पूर्व निर्मित वर्गीकरण पद्धतियों का अध्ययन करने के पश्चात् इस पद्धति का 1933 में प्रतिपादन किया तथा इन्होंने सामान्य एकलों का विश्लेषण कर अपनी प्रणाली में इनका उपयोग किया।

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के प्रथम संस्करण में इनको सामान्य उप-विभाजन (Common sub-division) नाम दिया गया तथा चौथे संस्करण में पूर्ववर्ती व परवर्ती सामान्य एकलों का प्रयोग किया गया। इस पद्धति के सातवें संस्करण में सामान्य एकलों को और अधिक बढ़ाया गया।

Number	Term	Facet Formula
a	Bibliography	a [T]
c	Concordance	
d	Table	
e	Formula	
f	Atlas	f [T]
k	Cyclopaedia	k [P], [P2]
m	Periodicals	m [P], [P2]
n	Serial	n [P], [P]
p	Conference Proceeding	p [P], [P2]

संयोजक चिन्ह के किया जाता है तथा इस श्रेणी में निम्न सामान्य एकल आते हैं—
 इस प्रकार के पूर्ववर्ती सामान्य एकलों का प्रयोग (S) पक्ष से पहले किया जाता है अर्थात् इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग मुख्य वर्ग (P) पक्ष (M) पक्ष व (E) पक्ष के बाद बिना किसी

Applicable before [S]

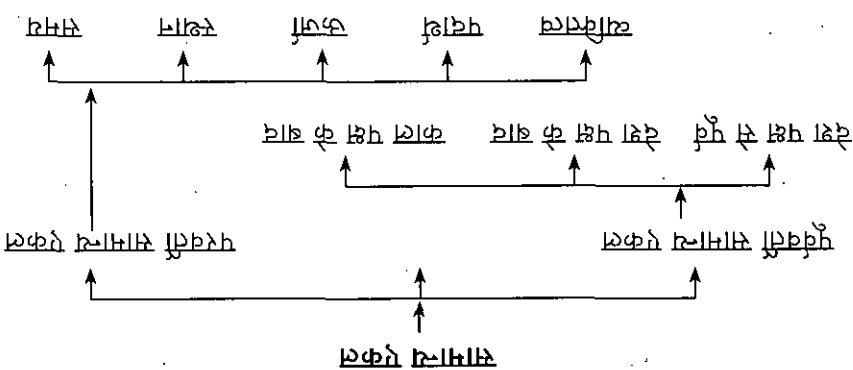
देश पक्ष में पूर्व प्रयोग होने वाले सामान्य एकल

यह सामान्य एकल तीन प्रकार के होते हैं।

तथा इनके लिए छोट्टे रोमन अक्षरों का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार के सामान्य एकलों को मुख्य वर्ग के साथ बिना किसी संयोजक चिन्ह के जोड़ा जाता है

पूर्ववर्ती सामान्य एकल Anteriorising Common Isolates



इस चार्ट की सहायता से समझाया गया है—

यहाँ ग्रंथ के वर्गीकृत के लिये काम में आने वाले सामान्य एकलों को दो भागों में बाँटा गया है जिन्हें

1. संग्रहकों (Collection Numbers) से सम्बन्धित सामान्य एकल।
2. ग्रंथांक (Book Number) से सम्बन्धित सामान्य एकल।
3. ग्रंथ के वर्गीकृत (Class Number) से सम्बन्धित सामान्य एकल।

है जो निम्न प्रकार है—

द्वितीय वर्गीकरण पद्धति के छठे संस्करण में तीन प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग किया गया



खण्ड-३
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



v	History	v [S], [T]
w	Biography	w [S], [T]
x	Collection	x [S], [T]
y1	Programme of Instruction	
y2	Syllabus	
y3	Synopsis	
y4	Scope	
y7	Case Study	y7 [S], [T]
y8	Digest	

इस प्रकार सामान्य एकलों को निम्न उदाहरणों की सहायता से समझाया जा सकता है—

1. Bibliography of Library Science 1967
2aN7
2. Concordance of Shakespear
011, 2J64C
3. Table of Economics
Xd
4. Formula of Sodium
E11c
5. Geographical Atlas in 1967
UfN67

सामान्य एकल k, m, n, p, v में (P) पक्ष भौगोलिक विधि (GD) से प्राप्त किया जाता है तथा (P2) पक्ष कालक्रम विधि (CD) के द्वारा प्राप्त किया जाता है तथा इन सामान्य एकलों को निम्न उदाहरणों से समझा सकते हैं—

1. History of Ayurveda in India upto 1950
LBV 44, N5
2. National Conference of Library Classification (Bombay 1985)
2 : 51 p 44, N 85
3. Botànica (Journal of Botany, Bombay 1950)
Im44, N50
4. International Encyclopedia of Library Science
2k1

सामान्य एकल w (Biography) में किसी भी व्यक्ति की जीवनी के लिये अलग-अलग पक्ष सूत्र दिया गया है। अगर सामूहिक रूप से जीवनी के वर्गाक बनाने हों तो (S) व (T) पक्ष का प्रयोग किया जायेगा तथा एक व्यक्ति के जीवनी के वर्गाक तैयार करने हों तो (P) पक्ष के रूप में उस व्यक्ति की जन्म तिथि का प्रयोग करते हैं।

Ex. 1. Biography of Dr. S. R. Ranganathan (1892)
2wM92

सामान्य एकल जीवनी (w) की तरह सामान्य एकल संग्रह (x = Collection) का पक्ष सूत्र दिया गया है।

Ex. 1. Works of German Scientists. (Youngest born in 1950)
Ax55, NS

सामान्य एकल y7 (Case Study) का परिसूत्र भी w के समान ही है तथा y7 के अन्तर्गत राजनैतिक व्यक्तियों की जीवनी के वर्गीक बनाये जाते हैं।

Ex. 1. Biography of Kennedy
V73y7M17

केवल देश पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले सामान्य एकल

Applicable after [S]

इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग देश पक्ष के बाद बिना किसी योजक चिन्ह के किया जाता है अर्थात् इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग मुख्य वर्ग, (P) पक्ष, (M) पक्ष व (E) पक्ष तथा (S) पक्ष के बाद ही किया जाता है।

इस श्रेणी में दो सामान्य एकल आते हैं जो इस प्रकार हैं—

- r = Administration report
- s = Statistics (if periodical) 8 (T)

Ex. :

1. Administrative report of Secondary Education in India
T2.44r
2. Annual Statistics of Wheat Production in India
J382 : 7.44s

यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि इस प्रकार के सामान्य एकल का प्रयोग केवल क्रमिक आँकड़ों हेतु ही किया जाता है।

केवल काल पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले सामान्य काल

Applicable only after [T]

इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग केवल काल पक्ष के बाद ही किया जाता है तथा इस श्रेणी में निम्न सामान्य एकलों को रखा गया है—

- s = Statistics (if stray)
- t = Commission Report
- t4 = Survey Report
- t5 = Plan
- t6 = Ideal
- v = Source Material
- v5 = Literature
- v6 = Tradition
- v7 = Archaeology
- v8 = Archive

इस श्रेणी के किसी भी सामान्य एकल को कोई परिसूत्र नहीं दिया गया है।

Ex.

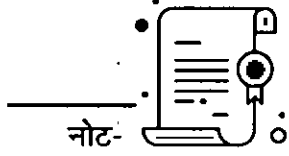
1. Murders in Rajasthan (Statistics of 1992)
Y : 45112.4431 'N92s
2. Kothari Commission report, 1964
T4.44 'N65t

खण्ड-3

ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



खण्ड-३
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



3. Survey report of Secondary Education in Rajasthan, 1962
T2.4437 'N62t4
4. Plan of Higher Education in India, 1997
T4.44 'N97ts

परवर्ती सामान्य एकल Posteriorising Common Isolates

इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग योजक चिन्ह के साथ किया जाता है तथा सामान्यतया इनका प्रयोग (S) पक्ष के बाद ही किया जाता है। इस प्रकार के सामान्य एकल निम्न पाँच प्रकार के होते हैं—

(i) परवर्ती व्यक्तित्व सामान्य एकल

PCI-Personality Common Isolates

इस प्रकार के सामान्य एकलों का प्रयोग सामान्यतया (S) पक्ष के बाद किया जाता है तथा इस प्रकार के सामान्य एकलों के लिये योजक चिन्ह कॉमा (,) का प्रयोग किया जाता है। इस श्रेणी में निम्न सामान्य एकल आते हैं—

CC-6

- b = Profession
- d = Institution
- e = Educational
- e2 = Lower
- e4 = Higher
- f = Investigation
- f2 = Observational
- f3 = Experimenting
- f4 = Discussional
- f7 = Yogic
- g = Learned Society
- h = Industrial Body
- k = Commercial Body
- w = Administrative Department of Government.

इस प्रकार के सामान्य एकलों का परिसूत्र भी दिया गया है। इसमें (P) पक्ष AD या CD से लाया जाता है तथा (P2) व (E) पक्ष मुख्य वर्ग इतिहास (History) से लाया जाता है।

Ex.

1. Library Profession in India
2, 44, b
2. Scientific Institutions of India
A.44, d
3. Roorkee Engineering University
D.44, t4, R
4. Function of Vice-Chancellor of Sukhadiya University, 1998
T4.44, d, S, 13 : 3 'N9s
5. Astronomical Observation at Rajasthan
B9.4437, f2

(ii) पदार्थ सामान्य काल PCI-Matter Common Isolates

द्विबिन्दु वर्गीकरण के छोटे संस्करण में इस प्रकार के सामान्य एकलों का कोई प्रयोजन नहीं है, लेकिन इसके सातवें संस्करण में पदार्थ सामान्य एकल का प्रयोग अधिक विस्तार के साथ किया है तथा इनके लिये योजक चिन्ह सेमीकोलन (;) का प्रयोग किया जाता है। कुछ परवर्ती पदार्थ सामान्य एकल इस प्रकार हैं—

- a01 = Property
- a02 = Existence
- a03 = Function
- a05 = Relation
- a06 = Identify
- a11 = Accuracy
- a12 = Reliability

(iii) परवर्ती ऊर्जा सामान्य एकल PCI-Energy Common Isolates

इस श्रेणी के सामान्य एकल का प्रयोग मुख्य वर्ग अथवा मुख्य वर्ग के किसी भी पक्ष के साथ इनके संयोजक चिन्ह कोलन (:) के साथ किया जाता है तथा इस श्रेणी में निम्न सामान्य एकल आते हैं—

CC-6

- b1 = Calculating
- b2 = Designing
- b6 = Measuring
- c1 = Weighing
- f = Investigation
- f2 = Observation
- f3 = Experiment
- f4 = Discussion
- g = Criticism
- p = Drafting
- r = Reporting
- v = Surveying

इस प्रकार के सामान्य एकलों को निम्न उदाहरणों की सहायता से समझाया जा सकता है—

1. Research on Secondary Education
T2 : f
2. Observations on Education
T : f2
3. Discussion of Higher Education
T4 : f4
4. Critical evaluation of Kothari Commission Report, 1964
T4.44 'M64t : g
5. Geographical Surveys
U : v
6. Weighing of Cotton Yarn
M71; 1 : C1

खण्ड-३

ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



7. Designing of Dresses

M8 : b2

CC-7 के अनुसार ऊर्जा सामान्य काल

- a02 = By Action
a012 = Decreasing
a014 = Increasing
a3 = Removing
a5 = Separating
aM = Ranking
aN = Classifying
aP = Naming

(iv) परवर्ती देश सामान्य एकल PCI-Space Common Isolates

पृथ्वी के किसी भी भाग-धरातल, आन्तरिक सतह या बाह्य सतह का प्रतिनिधित्व करने के लिये देश शब्द का प्रयोग किया जाता है। देश सामान्य एकल है अतः इसका प्रयोग सभी मुख्य वर्गों के साथ इनके सघनत्वक चिन्ह के साथ किया जाता है।

द्विचिह्न वर्गीकरण के उच्च संस्करण में देश पक्ष के लिये योजक चिन्ह डॉट (= dot) का प्रयोग किया था, लेकिन इसके सातवें संस्करण में इसके लिये बराबर (=) का प्रयोग किया गया है जोकि रजामाधन द्वारा प्रतिपादित भिन्नत्वधिता के सूत्र का उल्लंघन है।

द्विचिह्न वर्गीकरण के सातवें संस्करण में देश एकल के लिये तीन प्रकार के अंकों का उपयोग किया गया है-

1. इण्डो-अरेबिक अंक (Indo-Arabic Numerals) 0-9

2. दीर्घ रोमन वर्ण (Roman Capital Letters) A-Z

3. लघु रोमन वर्ण (Roman Small Letter) a-z

देश एकल को द्विचिह्न वर्गीकरण पद्धति के सातवें संस्करण को निम्न चार खण्डों में बाँटा गया है-

1. राजनीतिक विभाग (Political Division)

2. भौगोलिक विभाग (Geographical Division)

3. जनसंख्यासूचक विभाग (Population Cluster Division)

4. विद्यासूचक विभाग (Political Division)

1. राजनीतिक विभाग Political Division

इस प्रकार के विभाग के लिये इण्डो-अरेबिक अंकों का प्रयोग किया गया है। इसमें देश एकल को महाद्वीप, देश, राज्य आदि भागों में राजकीय विशेषता के आधार पर विभाजित किया गया है

जैसे-

1. Word
2. Mother Country
3. Favoured Country
4. Asia
5. Europe



श्री

(प्रयोगात्मक)

ज्ञान स्रोत : वर्गीकरण

खण्ड-3

द्वितीय वर्गीकरण के छठे व सातवें संस्करण में निम्न परिवर्तन किये गये जो इस प्रकार हैं—
 द्वितीय वर्गीकरण के छठे संस्करण में कुछ प्रलेखों को वर्गीकृत करने में असमता के कारण द्वितीय वर्गीकरण के सातवें संस्करण में इसका अधिक विस्तार किया गया।

CC-6	9B	East
CC-7	19B	East
	19D	Middle East
	19S	North
	19W	North East

4. दिशाानुसार विभाग Orientation Division

4437 = 03

Town of Rajasthan

Ex. :

03 कक्षा	5000-50,000
02 गाँव	500-5000
01 खड़ा—	500 तक

द्वितीय वर्गीकरण के सातवें संस्करण में निम्न एकल दिये गये हैं—

विभिन्न छोट व बड़े समूहों में जहाँ लोग निवास करते हैं उसे जनसंख्याानुसार विभाग कहते हैं। द्वि

3. जनसंख्याानुसार विभाग Population Cluster Group

एकल	गाँव/एकल	दो/एकल
मर्यादा	UK2	2K2
नदी	UF7	2F7

Ex. :

प्रयोग किया गया है।

द्वितीय वर्गीकरण-7 में भौगोलिक विभाग को विशेष तत्वों के रूप में माना गया है। ये अक्षय वक्र गाँव/एकल विभाग 'UB' से 'UX6' के समान हैं। सिर्फ प्राथमिक अंक U के स्थान पर Z का

2. भौगोलिक विभाग Geographical Division

भूदान	44971	44TT
नैपाल	4474	44T
CC-6		CC-7

में दर्शाया गया है।

यहाँ पर कुछ देश जो भारत से पृथक हैं उन्हें निम्नलिखित प्रकार से द्वितीय वर्गीकरण-6 व 7

6. Africa
7. America
8. Australia

खण्ड-3

ज्ञान स्रोतन : वर्गीकरण

(प्रयोगात्मक)



खण्ड-३

ज्ञान सञ्चलन : वर्गीकरण

(प्रयोगात्मक)



नोट-

(v) परवर्ती काल सामान्य एकल PCI-Time Common Isolates काल एकल का प्रयोग उनके योगक विन्दु सिग्नल इन्वर्टेड कॉमा () का प्रयोग किया जाता है तथा इसके दो स्तर होते हैं। इस पक्ष का प्रयोग किसी भी मुख्य वर्ग के साथ हमेशा एक रूप में होता है।

सार्वभौम वर्गीकरण में सामान्य एकल

(Common Isolates in Universal Classification)

सार्वभौम वर्गीकरण पद्धति में निम्न दो प्रकार की तालिकाओं का वर्णन किया जाता है—

1. सामान्य सहायक (Common Auxiliaries)

2. विशिष्ट सहायक (Special Auxiliaries)।

यहाँ सामान्य सहायकों को भी निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है—

1. भाषा सामान्य सहायक

2. रूप सामान्य सहायक

3. स्थान सामान्य सहायक

4. प्रजाति एवं राष्ट्रीय सामान्य सहायक

5. काल सामान्य सहायक

6. विशिष्ट दृष्टिकोण सामान्य सहायक।

ऊपर बताए गए 6 प्रकार के सामान्य सहायकों में से तीन को सामान्य एकलों में सम्मिलित किया जा सकता है—

1. रूप सामान्य सहायक Common Auxiliaries of Form

इस प्रकार के सामान्य सहायकों की सहायता से पहले की शैलिक स्वरूप को विशिष्टता प्रदान की जाती है तथा इनका प्रयोग किसी भी मुख्य वर्ग के साथ किया जा सकता है। इसका प्रयोग प्रकाश () में किया जाता है।

Ex. :

Dictionary of Economics

33(03)

2. स्थान सामान्य सहायक Common Auxiliaries of Place

इस प्रकार के सामान्य सहायकों के द्वारा भौगोलिक पहलुओं को प्रदर्शित किया जाता है तथा उन्हें कोष्ठक () में दर्शाया जाता है। राजनीतिक विभागों के अलावा विश्व के कटिबंध प्रदेशों, विश्वानुसार विभागों, प्राकृतिक विभागों तथा ध्वीय क्षेत्रों इत्यादि का भी प्रावधान तालिका में किया गया है।

Ex. :

Public Library Service in India

027.5 (540)

का अध्ययन करेंगे।

यहाँ हम द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति व सातवैय वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त संकेतक अंकों के वर्ण

Indicator Digits Used in Different Classification Schemes

विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में संकेतक अंक का प्रयोग

सहायक क्रम में स्थान प्रदान करने में सहायता देना।

5. वर्गीकरण पद्धति में बिना ज्यादा बदलाव किये पवित्र अथवा श्रृंखला में नवीन विषयों हेतु

सहायता देना।

4. पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति में विभिन्न पक्षां एवं एकलों को जोड़कर वर्गीक बनाने में

कोलन (:), ऊर्जा व क्रमा (.) व्यक्तित्व को दर्शाता है।

3. वर्गीकरण पद्धति में विभिन्न पक्षां की प्रकृति को इंगित करना; जैसे-द्विबिन्दु वर्गीकरण में

सुविधा होती है तथा इससे आँखों को भी आराम मिलता है।

2. संकेतक अंक बड़े वर्गीक को खण्डों में विभाजित करता है जिससे वर्गीक को पढ़ने में

1. संकेतक अंकों द्वारा विभाजित वर्गीकों को सुविधापूर्वक याद रखा जा सकता है।

इसके प्रमुख कार्य निम्नांकित हैं—

कार्य Function

→ तथा शून्य आदि ही योजक चिन्ह हैं।

पारदर्शिता के अनुसार, "वर्गीक के अंकों को जोड़ने हेतु प्रयुक्त विराम चिन्ह जैसे—, - एवं -

योजक चिन्हों को संकेतक अंक कहते हैं।"

शून्य के अनुसार, "वर्गीक के अंकों को जोड़ने के लिये प्रयुक्त चिन्ह अर्थात् वर्गीकरण पद्धति के

श्रेणियों जिसका कि एकल अभिव्यक्ति है, को दर्शाने वाले चिन्ह को संकेतक अंक कहते हैं।"

रचानाथन के अनुसार, "एकल संख्या के पहले प्रयुक्त किया जाने वाला एक चिन्ह जो मूलभूत

वैज्ञानिकों ने इस प्रकार परिभाषित किया है—

पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति में वर्गीक बनाने हेतु संकेतकों की आवश्यकता पड़ती है। इसको निम्न

जिस प्रकार किसी खिलौने को जोड़ने हेतु नट बोल्ट का प्रयोग किया जाता है। उसी प्रकार

संकेतक अंक Indicator Digits

पद्धतियों में किया जाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सामान्य एकलों का प्रयोग विशेष की सभी प्रमुख वर्गीकरण

Ex. : 5th Century = "04"

जाता है।

तथा इन सहायकों के द्वारा शताब्दी, दशवर्षी वर्ष, महीनों, घण्टों व मिनटों आदि से प्रदर्शित किया

इस प्रकार के सामान्य सहायकों को डबल इन्चर्ड कोमान्ड " " में इनका प्रयोग किया जाता है

3. काल सामान्य सहायक Common Auxiliaries of Time

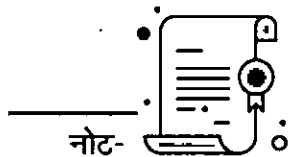


नोट-

(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संचालन : वर्गीकरण

खण्ड-3



1. सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण पद्धति

Universal Decimal Classification Schemes

इस वर्गीकरण पद्धति में संकेतक अंकों का विस्तृत प्रावधान है। इन्हीं प्रावधानों के कारण यह पूर्व निर्मित वर्गाकों के अलावा अन्य संयुक्त एवं जटिल विषयों के वर्गाक बनाने में समर्थ हो पाया है। इसलिये इस पद्धति को लगभग पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति कहा जाता है।

सार्वभौम दशमलव वर्गीकरण पद्धति में काम में आने वाले संकेतक अंक निम्न हैं—

1. धन चिन्ह (+)—इस संकेतक चिन्ह की सहायता से दो वर्गाकों को आपस में जोड़ा जाता है जो लगातार ना हो।
Ex. : Astrology and Physics
S2 + 53
2. तिर्यक रेखा (/)—इस प्रकार के संकेतक अंक का प्रयोग क्रमिक रूप में काम आने वाले वर्गाकों को आपस में जोड़ने हेतु किया जाता है।
Ex. : Christianity 22/28
3. कोलन (:)—समान विचारधाराओं के दो वर्गाकों को जोड़ने हेतु संकेतक चिन्ह कोलन का प्रयोग किया जाता है।
Ex. : Statistics for Physics
311 : 53
4. एपोस्ट्रोफी (')—इस संकेतक चिन्ह का प्रयोग 546 व 547 में अधिक के लिए किया गया है।
Ex. : Sodium-Halogens Compounds
546.33'12
5. युग्म उद्धरण चिन्ह (" ")—इस प्रकार के संकेतक चिन्हों का प्रयोग समय को प्रदर्शित करने हेतु किया जाता है।
Ex. : 15th August, 1947
"1705"
6. छोटी आड़ी रेखा (—)—इस प्रकार के संकेतक अंकों का प्रयोग भौगोलिक क्षेत्रों तथा विशिष्ट सहायक उपखण्ड को दर्शाने हेतु किया जाता है।
Ex. : Safety in Civil Engineering
624-78
7. चक्राकार कोष्ठक में बराबर का चिन्ह (=)—इस प्रकार के संकेतक अंकों का प्रयोग प्रजाति व राष्ट्रीयता पहलुओं को प्रदर्शित करने हेतु किया जाता है।
8. चक्राकार कोष्ठक [()]—इस प्रकार के संकेतकों का प्रयोग स्थान के लिये किया जाता है।
Ex. : Public Library Services in India.
026(540)
9. चक्राकार कोष्ठक में शून्य [(0)]—इस प्रकार के संकेतक अंकों का प्रयोग भौतिक स्वरूपों को प्रदर्शित करने हेतु किया जाता है।



नोट-

10. बराबर का चिन्ह (=)—इस प्रकार के संकेतकों का प्रयोग भाषा सहायकों के लिए किया जाता है।
11. कोलन युग्म (: :)—इस प्रकार के संकेतक अंक का प्रयोग बहुत ही सीमित अर्थों में अधीनस्थता दर्शाने के लिए किया गया है।

Ex. : Scientific Education S :: 37.

2. द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में संकेतक अंकों का प्रयोग

Use of Indicator Digit in Colon Classification

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में निम्न संकेतक अंकों का प्रयोग किया गया है—

1. अल्पविराम [Comma (,)]—इस पद्धति में कॉमा का प्रयोग व्यक्तिपक्ष को प्रदर्शित करने हेतु किया जाता है।
Ex. : Hindi Poetry
0152, 1
2. सेमीकोलन (;)—इसका प्रयोग पदार्थ पक्ष को प्रदर्शित करने हेतु किया जाता है—
Ex. : Classification of Periodicals in Public Library :
22; 46 : 51
3. कोलन (:)—इस संकेतक अंक का प्रयोग ऊर्जा पक्ष को प्रदर्शित करने हेतु किया जाता है—
Ex. : Classification of Public Library :
22 : 51
4. संयोजक रेखा (-)—इस प्रकार के संकेतक अंकों का प्रयोग अध्यारोपण विधि हेतु किया जाता है—
Ex. : Rural Women
Y15-31
5. अग्रमुखी तीर (Forward Arrow)—प्रलेखों के भविष्य को प्रदर्शित करने हेतु इस प्रकार के संकेतक चिन्हों का प्रयोग किया जाता है—
Ex. : Future of Library Science in India
2.44 'M→
6. डोट (.)—इस प्रकार के संकेतक अंक का प्रयोग स्थान पक्ष हेतु किया जाता है।
Ex. : Education in India.
T.44
7. एकल उद्धरण चिन्ह (')—इस प्रकार के संकेतक अंक का प्रयोग समय पक्ष को प्रदर्शित करने हेतु किया जाता है।
Ex. : Teaching of Botany in 1998.
T.3(I) 'M98
8. शून्य (0)—इसका प्रयोग दशा सम्बन्धों (Phase Relation) को प्रदर्शित करने के लिये किया जाता है।
Ex. : Botany for Physics:
I0bC

उपयुक्त उदाहरण को अगर वैचारिक स्तर पर देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि एकल संख्या 1 = Cryptogamia 2 = Thallophyta, 3 = Bryophyta, 4 = Pteridophyta एकल संख्या 1 = Cryptogamia के अधीनस्थ है, लेकिन अकन स्तर पर इनका अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है कि यह सब एकल संख्याओं समकक्ष है।

1. = Cryptogamia
2. = Thallophyta
3. = Bryophyta
4. = Pteridophyta

Ex. 2 : Botany

आती है।

इस उदाहरण पर विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वैचारिक स्तर पर देखने पर एशिया, यूरोप, अफ्रीका, अमेरिका व ऑस्ट्रेलिया यह सभी एकल संख्या (World) के अधीनस्थ है, लेकिन अकन स्तर पर इन्हें देखते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि यह सब एकल संख्याओं समकक्ष नजर

- 1 = Word
- 4 = Asia
- 5 = Europe
- 6 = Africa
- 7 = America
- 8 = Australia

Ex. 1 :

इस निम्न उदाहरण की सहायता से समझाया जा सकता है—

एक-दूसरे के समकक्ष ही दिखाई देते हैं इसको ही पंक्ति में संघीयन कहते हैं।

वैचारिक स्तर पर देखते हैं तो यह एक-दूसरे के अधीनस्थ होते हैं, लेकिन अकन स्तर पर वह

पंक्ति में संघीयन Telescoping in Array

करती है।

उपयुक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि संकेतक अकों पर वर्गीकरण पद्धति की सफलता निर्भर

X8(J382)

Ex. : Wheat Industry.

जाता है।

10. बन्धक कोष्ठक [()]—इस प्रकार के संकेतक अकों का प्रयोग विषय विधि हेतु किया

V44 'M47 → M75

Ex. : History of India 1875-1947.

करने के लिये किया जाता है।

9. परवर्तनी तीर (Backward Arrow)—इसका प्रयोग समय के विशेष विस्तार को प्रदर्शित



(प्रयोगात्मक)

ज्ञान संचालन : वर्गीकरण

खण्ड-2

की एक युक्ति है।

मूजल विवेक्षण ज्ञान जगत के विभिन्न कर्मों के विद्यार्थी को सम्भावित मूडलों में विभाजित करने

विद्यार्थी को जन्म दिया है।

गुणों को प्राप्त कर लिया है। उन्होंने शिक्षित अंकन की सहायता से मूजल विवेक्षण की एक नई

ज्ञान संतान के अपनी द्वितीय वर्गीकरण पद्धति में शिक्षित अंकन को अपनाकर, उक्त दोनों

आवश्यक है अंकन के माहिरता (Flexibility) और वृद्धिशीलता (Expansibility) का गुण हो।

है। इसके द्वारा बहुआयामी ज्ञान को एक सीधी रेखा में व्यवस्थित किया जा सकता है। इसके लिये

अंकन के धरातल पर विद्यार्थी को, यहाँ से वर्गीकरण की कृत्रिम भाषा में परिवर्तित किया जाता

वैचारिक, धार्मिक व अंकन के धरातल पर किया जाता है।

प्रकाशित ज्ञान को उपयोग योग्य बनाने के लिए इसे व्यवस्थित करना आवश्यक है। यह कार्य

ज्ञान अन्त, अपरिमय एवं निरन्तर गतिशील है। ज्ञान का प्रकाशन विविध रूपों में हो रहा है।

अर्थ Meaning

(Zone Analysis)

मूजल विवेक्षण

के रूप में हुआ है।

पक्ष के मध्य संयोजक चिन्ह का भी उपयोग नहीं किया गया, क्योंकि यहाँ उसका उपयोग (2P)

अनुपस्थिति में (2P2) पक्ष में (2P) पक्ष की जाह ले ली तथा ऐसी स्थिति में (E) व (2P2)

उस पक्षों का संघटन कहा जाता है। जैसे उपर्युक्त उदाहरण में हुआ है कि (2P) पक्ष की

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि जब पक्षों का क्रम परिवर्तन हो जाता है तो

(2P) के रूप में हुआ है।

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों को देखने पर पता चलता है कि दूसरे उदाहरण में (2P2) का प्रयोग

BC (P) : (E) (2P), (2P2)

इतिहास मुख्य वर्ग का पक्ष सूत्र निम्न प्रकार है—

है।

दोनों उदाहरणों की सहायता से पक्षों की संघटन की सहायता को आसानी से समझाया जा सकता

V44 : 19 (X)

BC (P) : (E) (2P2)

Economic Policy of India

Or

V41 : 1973, (2B)

(BC) (P) : (E) (2P), (2P2)

(1) China Diplomatic Relation with USA

Ex. :

निम्न उदाहरण की सहायता से समझाया जा सकता है—

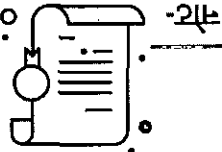
पक्षों के संघटन से तात्पर्य है कि जब पक्षों का क्रम परिवर्तन हो जाता है। पक्षों में संघटन को

पक्षों का संघटन Telescoping of Facet

खण्ड-3

ज्ञान संतान : वर्गीकरण

(प्रयोगात्मक)



खण्ड-३
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)

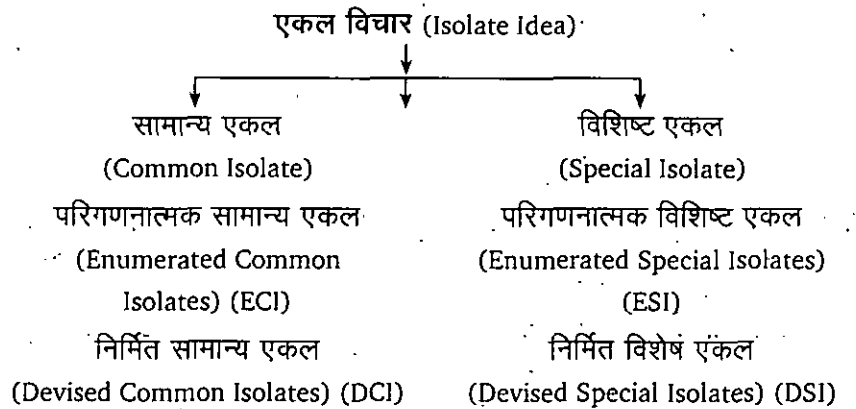


डॉ. रंगनाथन के मस्तिष्क में यह विचार प्रत्यक्ष रूप से न आकर अप्रत्यक्ष रूप से आया। अपनी पद्धति का निर्माण करते समय उन्होंने ज्ञान जगत् के वैचारिक धरातल पर उपलब्ध सम्भावित मण्डलों के विषय में कभी नहीं सोचा था। अपनी पद्धति (CC) की एकलों में ग्राह्यता का गुण प्राप्त करने की दृष्टि से उन्होंने चार-चार मण्डलों के विषय में सोचा और कालान्तर में ज्ञान जगत् में विद्यमान इन चार प्रकार के एकल विचारों को उन्होंने अंकन के धरातल पर प्रस्तुत किया। मण्डल विश्लेषण की अवधारणा के अनुसार रंगनाथन का मानना है कि वैचारिक स्तर पर चार प्रकार के एकल विचार पाये जाते हैं जो चार प्रकार के मण्डलों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन चार प्रकार के विचारों को मुख्य रूप से दो प्रमुख भागों में बाँट सकते हैं—

- (i) Common Isolate Ideas—ऐसे एकल विचार जो अनेक विषयों से सम्बन्धित होते हैं।
 - (ii) Special Isolate Ideas—ऐसे एकल विचार जो किसी विशिष्ट वर्ग से सम्बन्धित होते हैं।
- उपर्युक्त प्रत्येक भाग को पुनः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप निम्नलिखित चार प्रकार के एकल विचार निर्मित होते हैं—

1. परिगणनात्मक सामान्य एकल (Enumerated Common Isolates : ECI)
2. परिगणनात्मक विशेष एकल (Enumerated Special Isolates : ESI)
3. निर्मित सामान्य एकल (Divided Common Isolates : DCI)
4. निर्मित विशेष एकल (Devised Special Isolates : DSI)

इन्हें एक चित्र (Diagram) के रूप में निम्नलिखित प्रकार प्रदर्शित किया जाता है—



उक्त चार प्रकार के एकल विचारों से निम्नलिखित चार प्रकार के मण्डल निर्मित हुए जिनका अनुक्रम किसी पंक्ति में निम्नलिखित प्रकार होगा—

- | | |
|-----------|----------|
| (i) ECI | (ii) ESI |
| (iii) DCI | (iv) DSI |

उक्त अनुक्रम सहायक अनुक्रम के सिद्धान्तों को सन्तुष्टि प्रदान करता है, क्योंकि इसके द्वारा दो प्रकार के वर्णित (Enumerated) एकल एक स्थान पर दूसरे दो प्रकार के निर्मित (Devised) एक स्थान पर आ जाते हैं।

(ECI) का सम्बन्ध approach material तथा Generalia वर्ग से है अतः इन्हें (ESI) से पूर्व रखा जाना चाहिए।

निर्मित (Devised) एकलों का अनुक्रम निश्चित करते समय यह देखा गया कि वर्णक्रम तथा कालक्रम विधियों का प्रयोग प्रायः विषय विधि की अपेक्षा अधिक होता है, अतः DCI को अन्तिम स्थान दिया गया है।

CC पद्धति मिश्रित अंकन पर आधारित होते हैं।

Zone 1 का प्रारम्भ दो शून्य (Two Zeros) से

Zone 2 का प्रारम्भ एक शून्य (One Zeros) से

Zone 3 का प्रारम्भ बिना शून्य के। इसमें परम्परागत मुख्य वर्गों का उल्लेख है।

अंकन के धरातल पर प्रावधान

CC में चार प्रकार के अंकों का प्रयोग किया गया है। ये चार प्रकार के अंकन, अंकन के धरातल पर चार प्रकार के मण्डलों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जो निम्नलिखित प्रकार हैं—

रोम छोटे अक्षरों के (abc.....z) प्रयोग से : Zone 1

इण्डो-अरेबिक अंकों (1, 2, 3.....9) के प्रयोग से : Zone 2

रोम बड़े अक्षरों (abc.....z) प्रयोग से : Zone 1

कोष्ठक में अंकों का प्रयोग से : Zone 4

शून्य मण्डल Zero Zone

डॉ. रंगनाथन ने एक नये मण्डल (शून्य मण्डल) का प्रावधान कर लगभग 265 नए एकलों को मण्डल 2 में स्थान देने की क्षमता उत्पन्न कर दी है। इनके द्वारा 15 नये सेक्टर निर्मित हो सके हैं।

मुख्य वर्गों के अन्तर्गत मण्डल निर्धारण Zone in Main Clauses

मण्डल-1 (Zone 1)

Generalia Main Class-z

मण्डल-2 (Zone 2)

इस मण्डल के अन्तर्गत वे मुख्य वर्ग सम्मिलित किये गये हैं जिन्हें परम्परागत मुख्य वर्गों के अन्तर्गत नहीं रखा जा सका है—जैसे :

1. U. K.
2. Lib. Sc.
3. Book Science
4. Journalism

मण्डल-3 (Zone 3)

परम्परागत मुख्य वर्ग : A-Z तक।

मण्डल-4 (Zone 4)

ऐसे मुख्य वर्ग जिनका सम्बन्ध आधुनिक समय में विकसित तकनीकियों से है

- (; g) Criticism Technique
(p) Conference Techniques
(r) Adm. report Techniques
(P) Communication Theory
(X) Management.

खण्ड-३

ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



खण्ड-३
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



दूसरे अनुक्रम की पंक्ति के मण्डल

Zones of Classes in Second Order Array

चार प्रकार के मण्डल जिन्हें मुख्य वर्ग z Generals के अन्तर्गत खोजा गया है वे निम्नलिखित प्रकार हैं—

मण्डल-1 (Zone 1)	za General bibliography zk General periodicals
मण्डल-2 (Zone 2)	मुख्य वर्ग Z को भौगोलिक क्षेत्र में विभाजित कर वर्गों का निर्माण किया है जैसे—z44 Indology, z41 Sinology.
मण्डल-3 (Zone 3)	इस मण्डल का निर्माण मुख्य वर्ग Z generalia को किसी व्यक्ति विशेष के नाम के प्रथम अक्षर से विभाजित कर किया जाता है (ऐसे व्यक्ति जिसका सम्बन्ध किसी वर्ग विशेष से न हो) zG = Gandhana, zN = Nehruani.
मण्डल-4 (Zone 4)	ऐसे वर्ग जिन्हें सामान्य वर्ग के साथ किसी विशिष्ट विषय से भी जोड़ा जा सकता हो z(Q3) Jainology, z(O7) Islamology.

व्यक्तित्व पक्ष के मण्डल Zones in Personality Facet

इसमें 3 मण्डल ही पाये जाते हैं अर्थात् Zone 1, 2 व 3 का ही प्रयोग सम्भव है।

Zone 1	Approach material Xa Bib. on Eco. Xm Journal of Eco.
Zone 2	मुख्य वर्ग के [P] पक्ष में विशिष्ट एकल X4 Eco. of Transport X5 Eco. of Commerce
Zone 3	Systems and Specials Specials का निर्माण रिक्त अंक 9 का प्रयोग कर System का निर्माण कालक्रम विधि के द्वारा X9B Small Scale Industries XM Co-operative Economics

पदार्थ पक्ष के मण्डल Zones in Matter Facet

डॉ. रंगनाथन का मानना है कि पदार्थ पक्ष का सामान्य वर्गीकरण में विशेष उपयोग नहीं है, किन्तु गहन वर्गीकरण में इसकी अत्यधिक आवश्यकता है। इसके लिए कुछ पदार्थ एकलों को, सामान्य पदार्थ एकलों (Common Matter Isolates) की श्रेणी में डालकर उनका उपयोग किया जा

सकता है। अंकन के स्तर पर चार मण्डलों में विभाजन कार्य अभी तक नहीं हो पाया है तथापि पदार्थ एकलों को निम्न दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

Property Attribute Common Isolates

Value Attributes Common Isolates

उक्त आधार पर रंगनाथन ने केवल Zone 2, 3 व 4 का प्रयोग बताया है—

Value CMI	Musical Quality;	nr	NR
	Ethical Values;	r4	R4
Property CMI	Physical,	Chemical,	Bio
	; c	; e	; g

ऊर्जा पक्ष के मण्डल Zones in Energy Facet

रंगनाथन के अनुसार ऊर्जा पक्ष में एक ही पंक्ति सम्भव है, कोई शृंखला नहीं होती। अतः मण्डलों में विभाजन करते समय वह Common Energy Isolate कहे जाते हैं—इसमें Zone 1, 2 व 4 का प्रयोग।

Zone 1	2 : f Research in Lib. Sc.
	2 : g Cr. of Lib. Sc.
Zone 2	2 : 2 Org. of Libraries
	2 : 3 Functions of Librarian
	2 : 4 Co-operation of Librarian
Zone 4	2 : (Y) Sociological Study of Libraries
	2 : (Z) Library Legislation

स्थान पक्ष के मण्डल Zones in Space Facet

इसमें Zone 2, 3 व 4 का प्रयोग—परम्परागत वर्गीकरण में विश्व को महाद्वीप, देशों, प्रदेशों में विभाजित करना पर्याप्त है किन्तु गहन वर्गीकरण में विश्व को अन्य विशेषताओं के आधार पर विभाजित करना आवश्यक है जैसे—भाषा, धर्म, आर्थिक, सामाजिक दिशानुसार इत्यादि।

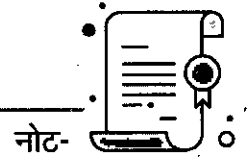
Zone 2	11 Eastern hemisphere
	12 Southern hemisphere
Zone 3	19 B East
	19 M West
Zone 4 by (CD)	1 (Q7) Muslim Countries
	1 (W6) Democracies
	1 (Y : 3) Developed Countries
	1 (Y : 41) Under Developed Countries

(S2) के दो Zone :

Zone 1	F Forest
	g7 Mountain
Zone 3 (orientation)	9 B East
	9M West

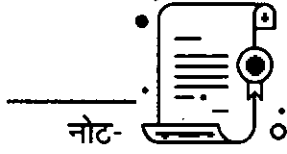
खण्ड-3

ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



खण्ड-३

ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



काल पक्ष के मण्डल Zones in Time Facet

इसमें भी Zone 1 व 3 का प्रयोग किया गया है—

Zone 1	Featured time Divisions
	C Day Time
	d Night
	n3 Summer
	n7 Winter
Zone 3	Public Time

1. भौतिकशास्त्र Physics

C9A	Specials	विशिष्ट
C9B1	Molecular Rays	आण्विक किरण
C9B2	Atom	अणु
C9B3	Nucleus	नाभिक

2. रसायनशास्त्र Chemistry

E9A	Specials	विशिष्ट
E9G	Bio-chemistry	जैव-रसायन

3. जीवविज्ञान Biology

G9	Specials	विशिष्ट
G9B	Embryo	भ्रूण
G9C	Child	शिशु
G9D	Adolescent	किशोर
G9E	Old Age	वृद्धावस्था

4. चिकित्साशास्त्र Medicine

L9A	Specials	विशिष्ट
L9B	Embryo	भ्रूण
L9C	Child	शिशु
L9D	Adolescent	किशोर
L9E	Old Age	वृद्धावस्था
L9F	Female	महिला
L9H	Tropical	उष्ण कटिबन्ध
L9T	Aviation	वैमानिकी
L9V	War	युद्ध
L9X	Industrial	औद्योगिक



नोट-

उपर्युक्त प्रत्येक विशिष्ट की सीमा केवल उसी क्षेत्र के सूक्ष्मतम अवयवों तक ही सीमित है और अन्य विशिष्ट से उनका सम्बन्ध कम है अर्थात् प्रत्येक विशिष्ट में विषय के एक निश्चित दृष्टिकोण से ही सम्बन्ध रखता है। उदाहरणार्थ, महिला चिकित्सा का विशेषज्ञ केवल महिला के शरीर के विभिन्न अंगों एवं उसकी समस्त समस्याओं और रोगों में अभिरुचि रखता है। अन्य विशिष्टों से उसका सम्बन्ध कम होता है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली में विशिष्ट का उल्लेख 9A/9Z की सहायता के प्रस्तुत किया गया है। किसी मुख्य वर्ग के अन्तर्गत विशिष्ट को एक पृथक् अस्तित्व प्रदान करने के लिए मुख्य वर्ग के अंकन के साथ 9 का अंक जोड़कर अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में से एक अक्षर लगा दिया जाता है। विशिष्ट के उप-विभाजन हेतु मूल वर्ग का पक्ष उपनियम प्रदान किया गया है।

उदाहरणार्थ :

L	Medicine	चिकित्सा
L95	Female	महिला-चिकित्सा
L9F, 3	Circulatory System of Female	महिलाओं का परिसंचरण तंत्र
L9F : 4	Diseases of Female	महिलाओं के रोग
L =	आधार वर्ग	(Basic Class)
9F =	विशिष्ट	(Specials)
3 =	व्यक्तित्व	(Personality : P)
4 =	ऊर्जा	(Energy : E)

प्रणाली Systems

प्रणाली से तात्पर्य है विशिष्ट अध्ययन अथवा विचाधारा के आधार पर किसी शास्त्रीय प्रविधि अथवा ज्ञानात्मक विषय के लिए प्रतिपादित प्रणाली अर्थात् किसी विषय में अभिव्यक्त विचारधारा से है। प्रणाली शब्द का अर्थ एक ऐसे विषय से है, जिसका अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोणों से किया गया हो। प्रणालियों की संख्या, दृष्टिकोणों की संख्या के अनुसार ही होगी तथा प्रत्येक दृष्टिकोण के अन्तर्गत विषय के सम्पूर्ण क्षेत्र पर विचार किया जाता है। उदाहरण के लिए चिकित्सा में ऐलोपैथिक प्रणाली, शिक्षा में बुनियादी शिक्षा प्रणाली, अर्थशास्त्र में पूँजीपति प्रणाली इत्यादि।

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में विभिन्न मुख्य वर्गों के अन्तर्गत प्रणाली की सूची दी गयी है; यथा—

1. भौतिकशास्त्र Physics

CA	Systems	प्रणाली
CK	Gravitation Theory	गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त
CM9	Electrom Theory	एलेक्ट्रॉन सिद्धान्त
CM96	Radio Theory	रेडियो सिद्धान्त
CN	Relativity	आपेक्षिकत्व



2. चिकित्साशास्त्र Medicine

LA	Systems	प्रणाली
LB	Ayurveda	आयुर्वेद
LC	Siddha	सिद्धा
LD	Unani	यूनानी
LL	Homoeopathy	होमियोपैथी
LM	Naturalopathy	प्राकृतिक

3. कृषि विज्ञान Agriculture

JA	Systems	प्रणाली
JB	Forestry	वन विद्या

इनके अतिरिक्त मुख्य वर्ग मनोविज्ञान (Psychology), शिक्षाशास्त्र (Education), इतिहास (History) तथा अर्थशास्त्र (Economics) के अन्तर्गत ही प्रणाली की सूचियाँ दी गयी हैं। इसमें प्रणाली का उल्लेख कालक्रम विधि (Chronological device) की सहायता से किया गया है। किसी प्रणाली की उत्पत्ति का काल उसकी विशेषता होती है। अतः किसी मुख्य वर्ग के अन्तर्गत प्रणाली के निर्माण हेतु मुख्य वर्ग के अंकन के साथ कालक्रम का अंकन जोड़ दिया जाता है।

उदाहरणार्थ :

XM	Co-operative	सहकारिता
----	--------------	----------

इसमें X = अर्थशास्त्र आधार वर्ग (Basic Class) है।

M = उन्नीसवीं शताब्दी अर्थात् सहकारिता का उद्भव 19वीं शताब्दी में कभी हुआ था अतः इस प्रणाली का अंक XM निर्धारित कर दिया गया है।

प्रणाली के उपविभाजन के लिए मुख्य वर्ग का पक्ष उपनियम प्रदान किया गया है।

उदाहरणार्थ :

X	Economics	अर्थशास्त्र
XM	Co-operative	सहकारिता
XM, 8(F182)	Co-operative	सहकारिता
	Iron Industry	लोहा उद्योग
XM, 8(F182) :	8 Management	सहकारी लोहा
	in Co-operative	उद्योग में
	Iron Industry	प्रबन्ध
X आधार वर्ग	(Basic Class)	
M प्रणाली	(System)	
8(F182) व्यक्तित्व	(Personality P)	
8 ऊर्जा	(Energy)	

अर्थ एवं परिभाषा Meaning and Definition (Facet Analysis) पक्ष विश्लेषण

सम्पूर्ण ज्ञान जगत को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। प्रकृति विज्ञान, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र। इनही तीन क्षेत्रों से मुख्य वर्गों की उत्पत्ति होती है। समस्त मुख्य वर्गों की स्थापना परम्परा द्वारा की गई है। विभिन्न देशों में ज्ञान एवं अनुसंधान के विभागों के रूप में विद्वानों द्वारा इन मुख्य वर्गों का निर्माण किया गया था। इसी उद्देश्य के लिए ये मुख्य वर्ग आज भी विद्यमान हैं। ज्ञान जगत को निश्चित मुख्य वर्गों में संगठित करने के परवाले प्रत्येक मुख्य वर्ग के लिए पक्षों की सीमा निश्चित कर दी जाती है। मुख्य वर्ग में सम्मिलित पक्षों के अन्तर्गत विषयों को रखा जाता है। प्रत्येक पक्ष में विशिष्ट विषय को एकल के रूप में सहायक क्रम में व्यवस्थित कर दिया जाता है। आवश्यकता अनुसार एकल को उप-एकलों में भी विभाजित किया जा सकता है।

ज्ञान जगत में पक्ष के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है। "पक्ष केवल वर्गों की ही विशेषता नहीं है वे प्रयुक्त वर्गीकरण पद्धति के लिए असाधारण हैं। इसके विपरीत पक्ष विषय में ही निहित है, चाहे वे हमें ज्ञात हों अथवा न हों। पक्ष विश्लेषण पर वर्गीकरण पद्धति को आधारित करने तथा वर्गीकरण पक्षों को उचित ढंग से व्यवस्थित करने पर ही विषयों की उपयोगी रूप में दर्शाया जा सकता है एवं वर्गीकरण पद्धति के अन्तर्गत इनकी व्यवस्था संसर्ग एवं सहायक क्रम में की जा सकती है। यदि वर्गीकरण की निर्माण विधि में प्रत्येक पक्ष को अखण्ड रखा जाय, तब यह क्रम अहिताक उपयुगी हो सकता है।"


उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि ज्ञान जगत के विभाजन की क्रिया में एक विशिष्ट स्तर पर 'पक्ष' (खण्ड) पद का प्रयोग किया जाता है। जब ज्ञान-जगत का विभाजन मुख्य वर्गों के स्तर तक किया जाता है, तब 'पक्ष' दृष्टिगोचर नहीं होते हैं किन्तु जब मुख्य वर्ग का विभाजन किया जाता है तब पक्ष की धारणा दृष्टिगोचर होती है। वास्तव में पक्षों का उद्देश्य एक मुख्य वर्ग को सम्मिलित दृष्टिकोणों में विभाजित करना है। एक मुख्य वर्ग निहित असंख्य सूक्ष्म विद्यार्थ अथवा सत्वों को पक्षों में संगठित किया जाता है। विषयों के विभाजन के लिए प्रयुक्त विशेषताओं की सहायता से एक वर्ग को पक्षों को निर्धारित किया जाता है। एक विषय को विभाजित करने के लिए असंख्य विशेषताएँ हैं तथा एक विशेषता की सहायता से एक पक्ष की उत्पत्ति होती है।

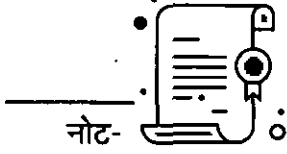
इस प्रकार पक्ष विश्लेषण वस्तुतः ज्ञान जगत के विद्यार्थों को व्यवस्थित करने की एक प्रक्रिया है। यह एक ऐसी तकनीक है जिसका प्रयोग एक मुख्य वर्ग में विद्यमान पक्षों या श्रेणियों को पहचानने के लिए किया जाता है।

पक्ष विश्लेषण पद की व्याख्या अनेक विद्वानों ने निम्नानुसार की है—

मैटकाफ के अनुसार : "पक्ष विश्लेषण को विशिष्ट मन्थों का विषय विश्लेषण कहा जा सकता है, जिसकी अभिव्यक्ति वर्गीकरण के द्वारा की जा सकती है। विषय के लिए परिभाषात्मक अथवा वैश्लेष्य-संश्लेषणत्मक वर्गीकरण का आधार कूटने के लिए किया गया विषय का विश्लेषण भी पक्ष विश्लेषण कहा जाता है।"

पामर तथा वेल्स—"विभिन्न विशेषताओं के प्रयोग द्वारा उत्पन्न पक्षों में विशिष्ट विषय के विश्लेषण को ही पक्ष विश्लेषण कहा जाता है।"

नोट-

 2705-3
 ज्ञान संज्ञान : वर्गीकरण (प्रयोगात्मक)



नोट-

डॉ. रंगनाथन—“पक्ष विश्लेषण उन सम्भावित विशेषताओं की शृंखलाओं का उल्लेख करना है, जिसके आधार पर एक मुख्य वर्ग को विभाजित किया जाता है।”

वास्तव में, एक विषय के पक्षों को निश्चित करने की सम्पूर्ण प्रक्रिया को पक्ष विश्लेषण कहा जाता है। एक विषय को विभाजित करते समय उसे विभिन्न पक्षों में पृथक् कर उनमें समस्त संभावित सत्त्वों का उल्लेख कर दिया जाता है। ग्रंथ का वर्गीकरण करते समय उसमें निहित सत्त्वों सम्बन्धित पक्षों की जाँच की जाती है एवं उल्लेख कर दिया जाता है। अधिकांश ग्रन्थों में एक पक्ष का दूसरे पक्ष में एकल एवं अन्य पक्ष के एकल के साथ सम्बन्ध रहता है। इस प्रकार के सम्बन्ध को पृथक् करने में पक्ष-विश्लेषण अत्यन्त सहायक होता है।

उदाहरणार्थ : उदाहरण के लिए वर्गीकरण के तीन ग्रंथ हैं—

- (A) Flowering Plant,
- (B) Ecology of Plant,
- (C) Ecology of Flowering Plant.

इन तीनों ग्रन्थों का सम्बन्ध मुख्य वर्ग वनस्पतिशास्त्र से है। ग्रंथ (A) मुख्य वर्ग के एक पक्ष-पौधों के परिवार से सम्बन्धित है। ग्रंथ (B) मुख्य वर्ग के अन्य पक्ष अध्ययन की समस्याओं से सम्बन्धित है। इन दोनों ग्रन्थों को पृथक् पक्षों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है परन्तु तीसरे ग्रन्थों में दो तत्त्वों-स्वाध्याय (Ecology) एवं Flowering Plants के सम्बन्ध का वर्णन है। यदि इस ग्रन्थ को किसी एक पक्ष के साथ रख दें, तब वह उचित वर्गीकरण नहीं है। इस समस्या का हल केवल पक्ष विश्लेषण की धारणा से ही प्राप्त होता है, जिसके अनुसार तीनों ग्रन्थों का निम्न प्रकार वर्गीकरण किया जा सकता है—

- (A) Botany + Flowering Plants 15
- (B) Botany + Ecology of Plants 1 : 5
- (C) Botany + Flowering Plants + Ecology of Plants 15 : 5

इस प्रकार (A) ग्रंथ में मुख्य वर्ग के साथ व्यक्तित्व पक्ष का (B) ग्रन्थ में मुख्य वर्ग के साथ ऊर्जा पक्ष का तथा (C) ग्रंथ में मुख्य वर्ग के साथ व्यक्तित्व एवं ऊर्जा पक्षों का प्रयोग किया गया है।

इस तरह द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली में एक विषय को विश्लेषित करने की विधि का समान रूप से अनुसरण किया गया है। वास्तव में इस पद्धति का सम्पूर्ण ढाँचा पक्ष विश्लेषण पर आधारित है। प्रत्येक मुख्य वर्ग के वर्गीकरण की सहायता के लिए पद्धति में पक्ष उपनियम की व्यवस्था की गई है। प्रत्येक पक्ष के अन्तर्गत एक विशेषता से व्युत्पन्न मौलिक पदों की अनुसूची की व्यवस्था की गई है।

पक्ष अनुक्रम की अभिधारणाएँ Postulates of Facet Sequence

एक संयुक्त विषय में पक्षों की पहचान करने के बाद अगला कार्य इन पक्षों का सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने का होता है। डॉ. रंगनाथन ने इसके लिए अनेक अभिधारणाएँ प्रतिपादित की हैं, जो निम्नानुसार हैं—

1. प्रथम पक्ष की अभिधारणा (Postulates of First Facet)—“एक संयुक्त विषय में मूल पक्ष प्रथम होना चाहिए।” अर्थात् एक संयुक्त विषय के अनेक पक्षों में से प्रथम पक्ष के रूप में किस पक्ष को रखा जाये, इसका निर्धारण प्रथम पक्ष की अभिधारणा के अनुसार किया जाना चाहिए। जैसा कि हम जानते हैं कि कोई भी एकल पक्ष अकेला, किसी विषय का

निर्माण नहीं कर सकता, जब तक कि उसके साथ कोई मूल पक्ष न जोड़ा जाये। सहायक अनुक्रम की मांग है कि एक मूल पक्ष से सम्बन्धित सभी विषय एक साथ तथा एक स्थान पर व्यवस्थित हो जाने चाहिए। यह तभी सम्भव है जबकि मूल पक्ष को सबसे पहले स्थान दिया जाये।

2. **मूर्तता की अभिधारणा** (Postulates of Concreteness)—संयुक्त विषय का प्रत्येक पक्ष किसी एक मूलभूत श्रेणी की अभिव्यक्ति होती है। इन पक्षों का व्यवस्था मूर्तता हास की अभिधारणा के अनुसार किया जाना चाहिए अर्थात् जो पक्ष सबसे अधिक मूर्त है, उसे सबसे पहले और जो पक्ष सबसे अधिक अमूर्त है, उसे सबसे बाद में रखा जाना चाहिए।
उदाहरणार्थ—व्यक्तित्व पक्ष (P) सबसे अधिक मूर्त तथा सबसे कम अमूर्त है। जबकि काल पक्ष (T) सबसे अधिक अमूर्त तथा सबसे कम मूर्त है। अतः उक्त अभिधारणा के अनुसार किसी संयुक्त विषय में प्रयुक्त पक्षों का व्यवस्थापन निम्नलिखित प्रकार से होना चाहिए—
P, M, E, S, T

उपर्युक्त दोनों अभिधारणा (प्रथम पक्ष की अभिधारणा एवं मूर्तता की अभिधारणा) एक साथ प्रयोग की जाए तो एक संयुक्त विषय को निम्न अनुक्रम में व्यवस्थित किया जावेगा—(BC) (P) (M) (E) (S) (T)

3. **स्तर समूहों की अवधारणा** (Postulates of a level Cluster)—इस अभिधारणा के अनुसार संयुक्त विषय में प्रयुक्त किसी मूलभूत श्रेणी से सम्बन्धित उसके एक आवर्तन में प्रयुक्त सभी स्तरों को एक साथ रखा जाना चाहिए अर्थात् एक मूलभूत श्रेणी से सम्बन्धित उसके सभी स्तरों को क्रमशः 1, 2, 3, 4 के क्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए। एक मूलभूत श्रेणी के एक आवर्तन में प्रयुक्त उसके सभी स्तरों के प्रयोग होने के उपरान्त ही, दूसरी मूलभूत श्रेणी के स्तरों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

पक्ष अनुक्रम के सिद्धान्त Principles of Facet Sequence

एक संयुक्त विषय में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न श्रेणियों के मध्य सहायक अनुक्रम निर्धारित करने के लिए मूर्तता हास की अभिधारणा सहायक सिद्ध हुई है किन्तु यह अभिधारणा किसी एक ही श्रेणी से सम्बन्धित दो या दो अधिक व्यक्तित्व एकल विचारों अथवा दो या दो से अधिक पदार्थ एकल विचारों अथवा दो या दो से अधिक ऊर्जा एकल विचारों अथवा दो या दो से अधिक स्थान एकल विचारों अथवा दो या दो से अधिक काल एकल विचारों के मध्य अनुक्रम निश्चित करने में अनुपयुक्त सिद्ध होंगी। अतः डॉ. रंगनाथन ने एक श्रेणी के अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाले एक से अधिक एकल विचारों (चाहे उनकी अभिव्यक्ति उस श्रेणी के आवर्तन के रूप में हुई है अथवा स्तर के रूप में) को सहायक अनुक्रम प्रदान करने की दृष्टि से कतिपय सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, जो उक्त समस्या का समाधान करने तथा वर्गीकरण को मार्गदर्शन प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुई है। ये सिद्धान्त निम्न हैं—

1. **मितिचित्र सिद्धान्त** (Wall picture principles)—इस सिद्धान्त का निर्माण डॉ. रंगनाथन ने सन् 1962 में एक ही मूलभूत श्रेणी से सम्बन्धित एकल विचारों का एक सुनिश्चित अनुक्रम प्रदान करने के लिए किया था।

इस सिद्धान्त के अनुसार यदि किसी विषय दो पक्ष 'अ' और 'ब' इस प्रकार के हैं कि पक्ष 'ब' पक्ष 'अ' के बिना क्रियाशील नहीं हो सकता, तो पक्ष 'अ' को पक्ष 'ब' से पूर्व रखा

खण्ड-३

ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



नोट-



संरचना (23वाँ संस्करण)

23वें संस्करण की प्रमुख संरचना और बनावट निम्न प्रकार है—

प्रथम खंड (Volume 1)—इस खंड की संरचना निम्न प्रकार है—

23वें संस्करण की मुख्य विशेषताएँ

(i) प्रस्तावना (Introduction) : उपयोग सम्बन्धी।

(ii) **Glossary** : डीडीसी में उपयोग होने वाले शब्द (terms) की संक्षिप्त परिभाषा। Glossary के लिए Index।

(iii) **Manual** : डीडीसी के उपयोग हेतु मार्गदर्शिका। (Guide to the use of the DDC)

(iv) **Tables** : इस भाग में छवजंजपद के लिए छः (6) तालिका दी गई हैं जिसका उपयोग वर्ग संख्या बनाने में होता है।

T1—Standard Subdivisions.

T2—Geographic Areas, Historical Periods, Biography.

T3—Subdivisions for the Arts, for Individual Literatures, for Specific Literary Forms.

T4—Subdivisions of Individual Languages and Language Families.

T5—Ethnic and National Groups.

T6—Languages.

(v) 22वें और 23वें संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन (Lists that compare Editions 22 and 23).

द्वितीय खंड (Volume 2)—

(i) DDC Summaries.

(ii) **Schedules** : 000-599 तक ज्ञान का संगठन (The organization of knowledge from 000-599)।

000—General works, Computer science and Information.

100—Philosophy and psychology.

100—Religion.

300—Social Sciences

400—Language

500—Pure Science

तृतीय खण्ड (Volume 3)—

(i) **Schedules** : 600-999 तक ज्ञान का संगठन (The organization of knowledge from 600-999)

600 – Technology

700 – Arts & recreation

800 – Literature

900 – History & geography

(ii) **Relative Index** : इस भाग में विषयों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है, जिसकी सहायता से हम आसानी से सम्बन्धित विषयों तक पहुँच सकते हैं—

विशेषताएँ (Features)—इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- (1) सरल पद्धति (Simplicity)—DDC अन्य पद्धति की अपेक्षा काफी सरल है। जिसका प्रयोग, वर्गांक को याद करने, लिखने व टाइप करने में आसानी होती है। इसी कारण इसका उपयोग भी सर्वाधिक किया जा सकता है।
- (2) इस भाग में विषयों में वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है। जिसकी सहायता से हम आसानी से सम्बन्धित विषयों तक पहुँच सकते हैं। यह डी.डी.सी. के उपयोग को काफी सरल बना देता है।
- (3) सापेक्षिक अनुक्रमणिका (Relative Index)—DDC में एक विशेष प्रकार के Index का प्रयोग किया गया है जिसको Relative Index कहा गया है। जिसमें समस्त विषयों के पर्यायवाची शब्द का भी प्रयोग किया है, जिससे वर्गीकार को अपना विषय खोजने में आसानी होती है।
- (4) वर्तमान संस्करण (23वें) में Table की संख्या छः (6) है।
- (5) 18 से 21वें संस्करण तक Table की संख्या सात थी।
- (6) सर्वप्रथम डी.डी.सी. के 14वें संस्करण में जड्सम का प्रयोग शुरू किया गया जिसमें Table की संख्या चार थी।
- (7) Form Division और Auxiliary Tables—Auxiliary Tables द्वारा वर्ग संख्या के निर्माण में लचीलापन प्रदान किया जाता है। डेवी द्वारा दूसरे संस्करण से Form Division का प्रयोग किया गया जिसमें Documents की विशेषताओं के साथ उसके Physical Form को भी ध्यान में रखा गया था।
- (8) मुख्य वर्गों का विभाजन—DDC में समस्त ज्ञान जगत को दस मुख्य वर्गों में तथा इसे पुनः 10 वर्गों में, तथा उन्हें पुनः दस फिर दस इस तरह विभाजित किया गया है। डी.डी.सी. के मुख्य वर्गों और Sub-Division की विस्तृत रूपरेखा पूर्व में वर्णित है।
- (9) मुख्य विभाजन (Minute Division)—डीडीसी का प्रथम संस्करण जो 44 पेजों में था। इसमें व्यापक तौर से वर्ग विभाजन का प्रावधान नहीं था। आगे चलकर इसके वर्गीकरण में नजदीकी वर्गीकरण के लिए डीवी महोदय द्वारा Minute division का प्रावधान किया गया।
- (10) मनमोनिक्स (Mnemonics)—डीडीसी की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसका Mnemonics है, Mnemonics का प्रयोग Subject synthesis के लिए किया गया है। इसके लिए विभिन्न प्रकार के Table, जैसे—Area Table, Language Table, Standard Division Table आदि, इसके अलावा Scheduled Mnemonics, Systematic Mnemonics और Alphabetical Mnemonics का भी प्रयोग किया गया है।
- (11) सम्बन्धित लोकेशन (Relative Location)—डीडीसी में Melvil Dewey द्वारा “Fixed location” के स्थान पर “relative location” का प्रयोग किया गया है। इसके लिए उन्होंने Arabic numbers के साथ decimal notation का भी प्रयोग किया। साथ ही उन्होंने पुस्तकों को सही क्रम में व्यवस्थित करने के लिए “relative location” का प्रयोग किया।
- (12) दशमलव अंकन (Decimal Notation)—DDC में केवल एक प्रकार के Notation का प्रयोग किया है तथा Indo-Arabic Numbers (0.9) का उपयोग किया गया है परन्तु ज्ञान जगत के Divisions को Sub-divisions में बाँटने के लिए तथा आँखों को आराम और

खण्ड-४

ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)

नोट-





वाणी को विराम देने के लिए तीन अंकों के बाद दशमलव का प्रयोग किया गया है। इसी वजह से इसका नाम दशमलव वर्गीकरण पद्धति किया गया है।

- (13) शुद्ध अंकन (Pure Notation)—DDC के प्रथम संस्करण में केवल एक प्रकार के अंकन (Notation) का प्रयोग किया गया और अंकन के लिए Indo-Arabic Numbers (0,1, 2, 1, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9) का ही उपयोग किया गया है और इन्हीं के द्वारा वर्गक बनाये जाते हैं।
- (14) परिगणनात्मक प्रणाली (Enumerative Pattern)—DDC वर्गीकरण पद्धति परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति (Enumerative Classification Scheme) का श्रेष्ठ उदाहरण है। जिसमें सभी विषयों का रेडीमेड वर्ग संख्या शैड्यूल (Schedule) में दिया गया है। हालांकि डीडीसी के पहले संस्करण को ही पूर्ण रूप से परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति माना है, क्योंकि दूसरे संस्करण से Form Division का प्रयोग फिर बाद के संस्करणों में Standard Sub-division और table का प्रावधान किया गया है। इसलिए डीडीसी के नवीन संस्करण को लगभग परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति (Almost Enumerative Classification Scheme) श्रेणी में रखा जाता है।
- (15) सार्वभौम पद्धति (Universal Scheme)—DDC में वैश्विक वर्गीकरण पद्धति है, जिसका उपयोग लगभग समस्त विश्व के देशों में पुस्तकालय वर्गीकरण के लिए किया जाता है। वर्तमान में इसे कई भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है तथा इसका ऑनलाइन संस्करण भी उपलब्ध है। इसकी लोकप्रियता का उदाहरण इस बात पर निर्भर करता है कि अब तक इसके 23 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं और इसका ऑनलाइन संस्करण भी उपलब्ध है।
- (16) फोएनिक्स शैड्यूल (Phoenix Schedule)—फोएनिक्स शैड्यूल दशमलव वर्गीकरण पद्धति की महत्वपूर्ण विशेषता है एवं इसका प्रयोग 16वें संस्करण से शुरू किया गया जो डीडीसी के शैड्यूल को अद्यतन रखने हेतु महत्वपूर्ण है। जब शैड्यूल Out of Date हो जाता है तो नवीन संस्करण में व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता होती है। इस क्रम में कई विषयों को पूरी तरह से खत्म कर दिया जाता है और नए विषयों को पूरी पुनर्गठित किया जाता है एवं इस प्रक्रिया के उपरान्त जो नवीन शैड्यूल प्राप्त होता है, फोएनिक्स शैड्यूल कहलाता है।

सार्वभौम वर्गीकरण पद्धति (UDC)

- (1) उन्हें FID-International Institute of Bibliography में उपलब्ध समस्त पुस्तकों एवं प्रलेखों के लिए किसी सूक्ष्म वर्गीकरण पद्धति की आवश्यकता का अनुभव हुआ। उन्होंने डीडीसी को संशोधित कर एक नवीन पद्धति विकसित करने का निर्णय लिया और इसके लिए डीडीसी के निर्माता Melvil Dewey से संशोधन की सहमति प्राप्त की। परिणामस्वरूप एक नवीन वर्गीकरण पद्धति UDC का प्रथम सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण सन् 1905 ई. में French भाषा में "Manual the Repeve Bibliographic Universal" नाम से प्रकाशित हुआ जो डीडीसी के 5वें संस्करण पर आधारित था।
- (2) इस पद्धति का निर्माण बेल्जियम के दो निवासी Henery La fontal तथा Paul Otlet ने किया था।

(3) इसका आविर्भाव 1895 में ब्रूसेल्स (वेल्लिजियम) में सम्पन्न International Conference of Bibliography-IIB के परिणाम स्वरूप हुआ था।

(4) UDC-Universal Decimal Classification पद्धति Melvil Dewey दशमलव वर्गीकरण पद्धति का एक अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार एवं प्रयोग है।

अब तक इसके कुल सात संस्करण (चार पूर्ण एवं तीन संक्षिप्त) प्रकाशित हो चुका है। अद्यतन संस्करण फ्रेंच, अंग्रेजी एवं स्पेनिश भाषा में प्रकाशित है साथ ही इसका CD-Rom और ऑनलाइन संस्करण भी उपलब्ध है।

खण्ड-४

ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



नोट-

UDC के विभिन्न संस्करण एवं प्रकाशन वर्ष

पूर्ण संस्करण (Complete Editions)

वर्ष	भाषा	शीर्षक
(1) 1905	French	Manual du Repertoire Bibliographique Universel
(2) 1933	French	Classification Decimale Universelle
(3) 1934	German	Dezimal Classification
(4) 1943	English	Universal Decimal Classification

संक्षिप्त अनुवाद संस्करण (Abridged Editions)

संस्करण	वर्ष
1st	1948
2nd	1957
3rd	1961

संरचना Structure

● प्रथम भाग (ज्ञान जगत का विभाजन)—यूडीसी के प्रथम भाग में सम्पूर्ण ज्ञान जगत को दो भागों में विभाजित किया गया है—

1. **Systematic Tables**—Systematic tables जिसे Schedules भी कहा जाता है, जिसमें समस्त वर्गों को 0-9 में विभक्त किया गया है।

UDC में सम्पूर्ण ज्ञान जगत को विभाजित करने के लिए डीडीसी की भाँति ही Decachotomy (दस वर्गों में विभाजन) विधि का प्रयोग किया गया एवं समस्त विषय जगत को दस मुख्य भागों में विभक्त किया गया है, साथ ही इसका सामान्य क्रम भी डीडीसी की भाँति ही व्यवस्थित है परन्तु इसमें चौथा वर्ग खाली रखा गया है और भाषा और साहित्य को एक ही मुख्य वर्ग में स्थान दिया है।

इसके अलावा डीडीसी की तरह ही इसे पुनः दस, पुनः दस इस तरह इसे उपविषयों में बाँटा गया है। यूडीसी में ज्ञान जगत का विभाजन इस प्रकार किया गया है—

0. Generalities Methodology, Documentation, Scripts etc.

1. Philosophy, Metaphysics, Logic, Ethics, Psychology

खण्ड-8
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)



2. Religion, Theology
 3. Social Sciences; including Statistics, Law, Education
 4. Vacant
 5. Pure Science, Mathematics and Natural Sciences
 6. Applied Sciences, Medicine and Technology
 7. The Arts including Architecture, Photography, Recreation Entertainment.
 8. Language, Linguistics, Literature
 9. Geography, Biography, History
2. **Auxiliary Tables**—यूडीसी में Auxiliary Table का प्रयोग है। इसके स्वरूप को वास्तव में डीडीसी से अलग करती है तथा इसे Faceted Classification Scheme का दर्जा दिलाती है। यूडीसी में दो तरह के Auxiliaries Table का प्रयोग किया गया है। Common Auxiliaries और Special Auxiliaries।
- UDC में Common Isolate के स्थान पर Common Auxiliaries का प्रावधान किया गया है। इसमें निम्न Common Auxiliaries का प्रयोग किया गया है।

चिन्ह	के लिए उपयोग
=	Common auxiliaries of language
(0.....)	Common auxiliaries of form
(1/9)	Common auxiliaries of place
(= ...)	Common auxiliaries of human ancestry, ethnic grouping and nationality
"...."	Common auxiliaries of time
-0....	Common auxiliaries of general characteristics : Properties, Materials, Relations/Processes and Persons
-02	Common auxiliaries of properties
03-	Common auxiliaries of materials
04-	Common auxiliaries of relations, processes and operations
05-	Common auxiliaries of persons and personal characteristics

(i) **द्वितीय भाग (Alphabetical Subject Index)**—Alphabetical Subject Index यूडीसी का द्वितीय भाग है, इसको 1988 ई. में प्रकाशित किया गया था। यह वास्तव में Computer Generated Index है जिसे Part-1 के Systematic Tables से लिया गया है। इसमें विषयों को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है, साथ ही काफी संख्या में समानार्थी शब्द (Synonymous Terms) का भी उपयोग किया गया है।

(ii) **विशेषताएँ (Features)**—Universal Decimal Classification की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) **सार्वभौमिक दशमलव वर्गीकरण पद्धति**—यह वर्गीकरण पद्धति Melvil Dewey की दशमलव वर्गीकरण पद्धति का एक अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार एवं प्रयोग के रूप में प्रकाशित की गई है इसलिए इसका नाम Universal Decimal Classification Scheme पड़ा है। इसके संस्करण फ्रेंच, अंग्रेजी एवं स्पेनिश भाषा में भी उपलब्ध है।



नोट-

- (2) **लगभग पक्षात्मक पद्धति**—UDC का प्रथम सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण सन् 1905 ई. में प्रकाशित हुआ जो डीडीसी के 5वें संस्करण पर आधारित था। इसलिए UDC में भी DDC की तरह ही बने बनाए वर्ग संख्या दिए गए हैं, इस कारण से यह Enumerative Pattern पर आधारित Classification Scheme है, लेकिन इसकी व्यवस्था कुछ-कुछ Faceted Scheme के जैसी भी है, इसलिए इसको Almost Faced Classification Scheme भी कहा जाता है। वास्तव में UDC में DDC पद्धति से वर्ग संख्या निर्माण में होने वाली बाध्यता को खत्म करने का प्रयास किया गया है ताकि विषयों का सटीक वर्गीकरण प्राप्त किया जा सके।
- (3) **ज्ञान जगत का विभाजन**—UDC में सम्पूर्ण ज्ञान जगत को DDC की तरह ही 10 मुख्य भागों में बाँटा गया है। साथ ही इसका सामान्य क्रम भी डीडीसी की भाँति ही व्यवस्थित है परन्तु इसमें चौथा वर्ग खाली माना गया है और भाषा और साहित्य को एक ही मुख्य वर्ग में स्थान दिया गया है।
- (4) **सहायक प्रावधान (Auxiliaries)**—यूडीसी में Auxiliaries Table का प्रयोग ही इसके स्वरूप को वास्तव में डीडीसी से अलग करती है तथा इसे Faceted Classification Scheme का दर्जा दिलाती है।
- (5) **सापेक्षिक अनुक्रमणिका (Relative Index)**—UDC में प्रयुक्त Index साधारण न होकर एक विशेष प्रकार का होता है, जिसे Relative Index कहा गया है।
- (6) **संयोजी चिन्ह (Indicator Digit)**—UDC में विभिन्न पदों के Not actions को जोड़ने के लिए विभिन्न प्रकार के Indicator digit का प्रावधान किया है।

Symbol	Symbol name	Meaning
	Plus	लगातार Main Classes को जोड़ने के लिए
	Stroke	अलगातार Main Classes को जोड़ने के लिए
	Colon	सम्बन्धित Main Classes को जोड़ने के लिए
[]	Square brackets	अधिनस्थ Main Classes को जोड़ने के लिए
*	asterisk	Non-UDC notation का प्रयोग
A/Z	alphabetical	Direct alphabetical specification

- (7) **मिश्रित अंकन (Mixed Notation)**—DDC में केवल एक प्रकार के Notation का प्रयोग स्वीकार किया है तथा Indo-arabic Numbers (0-9) का उपयोग किया गया है परन्तु UDC में DDC की तरह शुद्ध अंकन के बदले Mixed Notation का प्रयोग किया गया है। इसमें 10 Arabic Numbers तथा Roman, Capital Alphabeticals का प्रयोग किया गया है साथ ही कई तरह के योजक चिन्हों का भी प्रयोग किया गया है।

- (iv) इसमें उपमाक notation (Alphabet capital letters, small letters, subic numeral और colon) का प्रयोग किया गया है।
- (iii) विभिन्न facets को जोड़ने के लिए Colon चिह्न का प्रयोग किया गया है।
- (ii) इसमें Common Subdivisions, Geographical Divisions and Language divisions के लिए विशेष Schedule प्रदान किया गया है।
- (i) इसमें प्रत्येक बर्तिका वर्ग के लिए भिन्न Facts का प्रयोग किया गया।

4. तीन प्रकार के संस्करण (Three Versions of Colon Classification)—सीसी के अर्थ तक प्रकाशित हो चुके 7 संस्करणों को निम्न तीन वर्गों में रखा जा सकता है—
- (i) Version 1-Rigidly faceted (1933-1950)—Rigidly faceted पद्धति के तहत सीसी के प्रथम, द्वितीय और तृतीय संस्करणों को रखा जाता है। इन तीनों संस्करणों में विभाजन का पूर्व निर्धारण किया गया है।
- (ii) Version 2-Analytico-Synthetic (1950-1963)—Analytics Synthetic पद्धति के तहत सीसी के चौथे, पांचवें और छठे संस्करणों को रखा जाता है। इन तीनों संस्करणों में Facets का पूर्व निर्धारण के स्थान पर levels of fact और round का प्रयोग किया गया है।
- (iii) Version 3-Freely-Faceted (1963-1987)—Freely-Faceted पद्धति के तहत सीसी के सातवें संस्करण को रखा जाता है।

संस्करण	प्रकाशन वर्ष
1 ^०	1933
2 ^०	1939
3 ^०	1950
4 ^०	1952
5 ^०	1957
5 ^०	1960
7 ^०	1987

3. द्विचिह्न वर्गीकरण के विभिन्न संस्करण—
- विज्ञान के जनक के रूप में जाने जाते हैं।
2. द्विचिह्न वर्गीकरण पद्धति के प्रणेता डॉ. एस. आर. रंगनाथन थे जो भारत में पुस्तकालय पुस्तकालयों द्वारा किया जा रहा है।
1. एक प्रमुख पक्षान्तक वर्गीकरण पद्धति है जिसका उपयोग भारत तथा विश्व के कई

द्विचिह्न वर्गीकरण (Colon Classification)

ज्ञान सार्वजनिक : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)
8-802





नोट-

- (v) इसमें Decimal Fraction Notation का प्रयोग किया गया है, साथ ही Hospitality in array के उद्देश्य की पूर्ति के लिए Octave Notations (अष्टपदी अंकन) का प्रयोग किया गया है।
- (vi) इसमें 8 तरह के डिवाइस हैं—Colon device, Geographical device, Cronological device, Favorred category device, Classic device, Alphabetical device, Subject device और Bisa number device का प्रयोग किया गया है।
- (vii) इसमें पुस्तक संख्या (Book number) के निर्माण के लिए नए सिद्धान्त प्रदान किए गए जिससे समान Class Number वाले पुस्तकों को अलग Call Number प्रदान किया जा सके।
- (viii) इसमें Phases (चरणों) की अवधारणा का प्रयोग किया गया है।
- (ix) सीसी ने सबसे पहले विषय के मूलरूप से पाँच पक्ष व्यक्तित्व (Personality), तत्व (Matter), उर्जा (Energy), स्थान (Space) और काली (Time) अर्थात् “PMEST” की अवधारणा का प्रयोग किया।
- (x) सीसी तृतीय संस्करण (1950)—सीसी के तृतीय संस्करण में सभी Basic Class के लिए अलग अलग facet formula प्रदान किया गया।
- (xi) सीसी चतुर्थ संस्करण (1952)—सीसी के चतुर्थ संस्करण में प्रत्येक facts (fundamental categories) के लिए अलग-अलग योजक चिन्ह (Indicates digitis) का प्रयोग किया गया।

योजक चिन्ह	चिन्ह के नाम	Fundamental Categories के लिए उपयोग
	Comma	Personality
;	Semi-colon	Matter
:	Colon	Energy
.	Dot	Space
.	Dot	Time

- (xii) सीसी पाँचवां संस्करण (1957)—इस संस्करण में नियमों और scheduls में कई तरह के बदलाव किए गए।
- (xiii) सीसी छठा संस्करण (1960)—इस संस्करण के नियमों और scheduls में कई तरह के बदलाव किए गए तथा Greek letters के उपयोग को अनदेखा किया गया है।
- (xiv) छठे संस्करण का Reprint सन् 1963 में कुछ महत्वपूर्ण संशोधनों के साथ प्रकाशित किया गया था, जिसमें सबसे प्रमुख Time Facets के लिए dot (.) के स्थान पर Single inverted comma (') का प्रयोग शुरू किया गया।
- (xv) सीसी सातवें संस्करण (1987)—सीसी के सातवें संस्करण का निर्माण A.K. Neelameghan, M.A. Gopinath और S.K. Seetharama द्वारा किया गया है। इसमें प्रत्येक Basic classes के लिए Small schedule प्रदान किया गया, साथ ही Unit Schedule के लिए कुछ मानक प्रदान किए गए थे।

खण्ड-४
ज्ञान संगठन : वर्गीकरण
(प्रयोगात्मक)

नोट-



(xvi) सीसी के मुख्य वर्ग (Mainn Classes in C C)—सीसी में समस्त ज्ञान जगत को इस प्रकार मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया है—

मुख्य वर्ग (Main Classes)	विषयों का नाम (Name of the Subject)
Z	Generalis
2	Library Science
B	Mathematics
C	Physics
D	Engineering
E	Chemistry
F	Technology
G	Biology
H	Geology
HZ	Mining
I	Botany
J	Agriculture
K	Zoology
KZ	Animal Husbandry
L	Medicine
LZ	Pharmacognosy
M	Useful Arts
D	Spiritualism
N	Fine Art
O	Literature
P	Linguistics
Q	Religion
R	Philosophy
S	Psychology
T	Education
U	Geography
V	History
W	Political Science
X	Economics
Y	Sociology
Z	Law

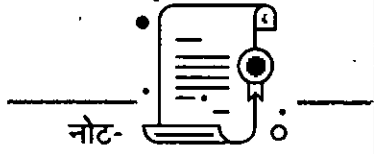
(xvii) अंकन (Notational System)—सीसी में वर्गों के निर्माण के लिए मिश्रित अंकन पद्धति का प्रयोग किया गया है तथा अंकन के लिए इन अंकों का प्रयोग किया गया है।

- 23 Roman small letters (a excluding i, l, o)
- 10 Indo Arabic numerals (0-9)



नोट-

- (c) 26 Roman Capital letters (A – Z)
- (d) Bracketed numbers
- (e) Indicator digit hyphen (–) and asterisk (*)
- (xviii) **कॉमन आईसोलेट (Common Isolates)**—वैसे Isolate जो ज्ञान की एक इकाई है तथा जो अपने आप में एक विषय नहीं है तथा इसका उपयोग सभी मुख्य वर्गों के साथ समान रूप से किया जा सकता है। इसको कई मुख्य वर्गों के साथ जोड़ा जा सकता है, जैसे—Encyclopedia, Dictionary, Periodical, Commission report और Conference proceeding आदि।
- (xix) डॉ. रंगनाथन द्वारा इसे दो वर्गों में विभाजित किया गया है—
- (a) **Anteriorising Common Isolates (ACI)**—जब ACI को विषय के साथ जोड़ा जाता है तो यह विषय के आगे स्थान लेता है। इसके लिए किसी भी योजक चिन्ह (connecting symbol) की आवश्यकता नहीं होती है। ACI तीन प्रकार के होते हैं—Applicable before Space Facet, Applicable after Space Face और Applicable after Time Facet। अतः ACI के उपयोग में डॉक्यूमेंट का व्यवस्थापन प्रभावित होता है।
- (b) **Posteriorising Common Isolates (PCI)**—जब ACI को विषय के साथ जोड़ा जाता है तो यह विषय के पीछे स्थान लेता है तथा इसके लिए योजक चिन्ह (Connecting Symbol) की आवश्यकता होती है और PCI को वर्ग संख्या के पीछे जोड़ा जाता है इसलिए इसके मूल वर्ग संख्या में परिवर्तन नहीं होता है, इसके लिए योजक चिन्ह (Connecting Symbol) की आवश्यकता होती है। PCI दो प्रकार के होते हैं—Energy PCI इसको वर्ग को कोलन (:) द्वारा और Personality PCI को वर्ग के साथ कोमा (,) द्वारा जोड़ा जाता है।
- (xx) **अनुक्रमणिका (Index)**—CC में एक विशेष प्रकार का Index का प्रयोग किया गया है जिसको Subject Index कहा जाता है। जिसमें समस्त विषयों के पर्यायवाची शब्द का भी प्रयोग किया है, जिसमें वर्गीकरण को अपना विषय खोजने में आसानी होती है।
- (xxi) इसमें सिर्फ Elementary terms का प्रयोग किया गया है तथा विषयों से सम्बन्धित अभिगमों को वर्ग संख्या के रूप में प्रयोग किया गया है जबकि डीडीसी, यूडीसी में उसका नाम दिया गया है।
- (xxii) इसमें चार तरह के Index प्रदान किए गए हैं—General Index Geographical Index तथा दो baMsDI Botany and Zoology के लिए प्रदान किए गए हैं।
- (xxiii) **सहायक क्रम में व्यवस्थापन (Helpful Sequence)**—Colon Classification के अन्तर्गत विषयों का सहायक क्रम प्रदान करते हुए सजाया गया है। सारे प्राकृतिक विज्ञान को एक साथ रखा गया है। जो Applied Science को Pure Science के बाद उन्हें रखा गया है जिनका वो आधारित है। उसी तरह से Humanities, Social Science को एक लाभ सहायक क्रम दिया गया है।
- (xxiv) **भविष्य के लिए प्रावधान**—सीसी की सबसे बड़ी विशेषता इसमें भविष्य के लिए प्रावधान है, सीसी में Extra polation और Inter Polation, तथा carry और Chain के प्रावधान से भविष्य में आने वाली विषयों को हस्ताहित कर लेने का पूरा रास्ता प्रदान किया गया है।



लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस

(Library of Congress Classification)

- एलसीसी (Library of Congress Classification) एक प्रमुख पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति है जिसका विकास सन् 1904 ई. में किया गया था तथा इसका उपयोग लाइब्रेरी ऑफ काँग्रेस पुस्तकालय में शुरू किया गया।
- वर्तमान समय में संयुक्त राज्य अमेरिका के अधिकांश शैक्षणिक पुस्तकालयों द्वारा तथा विश्व के अनेकों पुस्तकालयों द्वारा इसे प्रयोग में लाया जाता है। इसमें ज्ञान जगत को A से लेकर Z तक मुख्य वर्गों में इस प्रकार बाँटा गया है—

Class A - General Works

Class B - Philosophy, Psychology, Religion

Class C - Auxiliary Sciences of History (General)

Class D - World History (except American History)

Class E - American History

Class F - Local History of the United State and British, Dutch, French and Latin America

Class G - Geography, Anthropology, Recreation

Class H - Social Sciences

Class J - Political Sciences

Class K - Law

Class L - Education

Class M - Music

Class N - Fine Arts

Class P - Language and Literature

Class Q - Science

Class R - Medicine

Class S - Agriculture

Class T - Technology

Class U - Military Science

Class V - Nava Science

Class Z - Bibliography, Library Science

निष्कर्ष

(Conclusion)

इस अध्याय में हमने Book को Assign करना सीखा अर्थात् बुक नम्बरों को किस प्रकार डाला जाता है यह सीखा। बुक नम्बरों को डालना हमने कोलन वर्गीकरण UDC वर्गीकरण और ड्यूवी डेसीमल वर्गीकरण के द्वारा सीखा।

महत्वपूर्ण तथ्य

(Important Terms)

1. Book Nuber अर्थात् ग्रंथांक निर्मित करने के लिए अनेक प्रणालियाँ प्रयोग में प्रचलित हैं।

2. प्रणालियों में बुक का नम्बर लेखक के कुल नाम के आधार पर, लेखक के नाम के क्रमिक संख्या के आधार पर पुस्तक के प्रकाशन वर्ष के आधार पर तथा द्विबिन्दु ग्रंथांक पद्धति के आधार पर दिया जाता है।
3. दशमलव वर्गीकरण पद्धति का विकास Melvil Dewey ने किया था। इसमें इन्होंने सम्पूर्ण ज्ञान जगत अर्थात् Book को विभाजित करने के लिए Decachotomy विधि का प्रयोग किया तथा समस्त विषय को दस मुख्य भागों में बाँटा। द्विबिन्दु वर्गीकरण एक पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति है जिसका उपयोग विश्व तथा भारत के कई पुस्तकालयों में किया जाता है।

नोट-



अभ्यास प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न Very Short Answer Type Questions

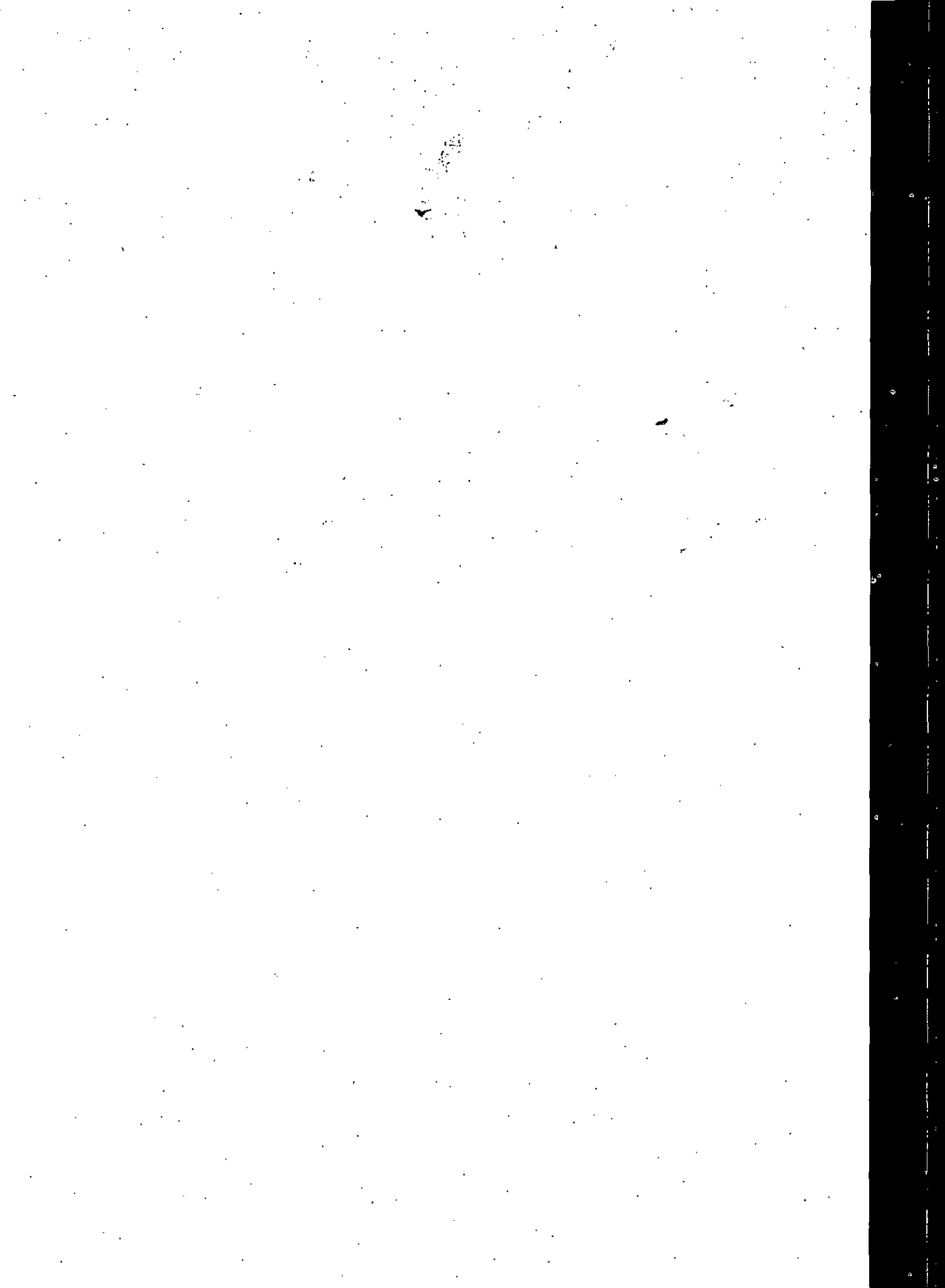
1. बुक असाइन नम्बर अर्थात् ग्रंथांक पद्धति क्या है?
2. बुक नम्बर देते समय हम विभिन्न प्रणालियों को अपनाते हुए किन बातों का ध्यान रखते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न Short Answer Type Questions

1. द्विबिन्दु ग्रंथांक पद्धति पर संक्षिप्त नोट लिखिए।
2. सार्वभौम वर्गीकरण पद्धति पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न Long Answer Type Questions

1. पुस्तकालय वर्गीकरण की विभिन्न प्रजाति का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. दशमलव वर्गीकरण पद्धति का सविस्तार वर्णन कीजिए।



B.LIB.-105

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः !
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुःख भाग्भवेत्!!



DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION
SWAMI VIVEKANAND
SUBHARTI UNIVERSITY

Subharti Puram, N.H.-58, Delhi-Haridwar By Pass Road
Meerut, Uttar Pradesh 250005

Website : www.subhartidde.com, Email : ddesvsu@gmail.com